सर की कार, सर पर सवार

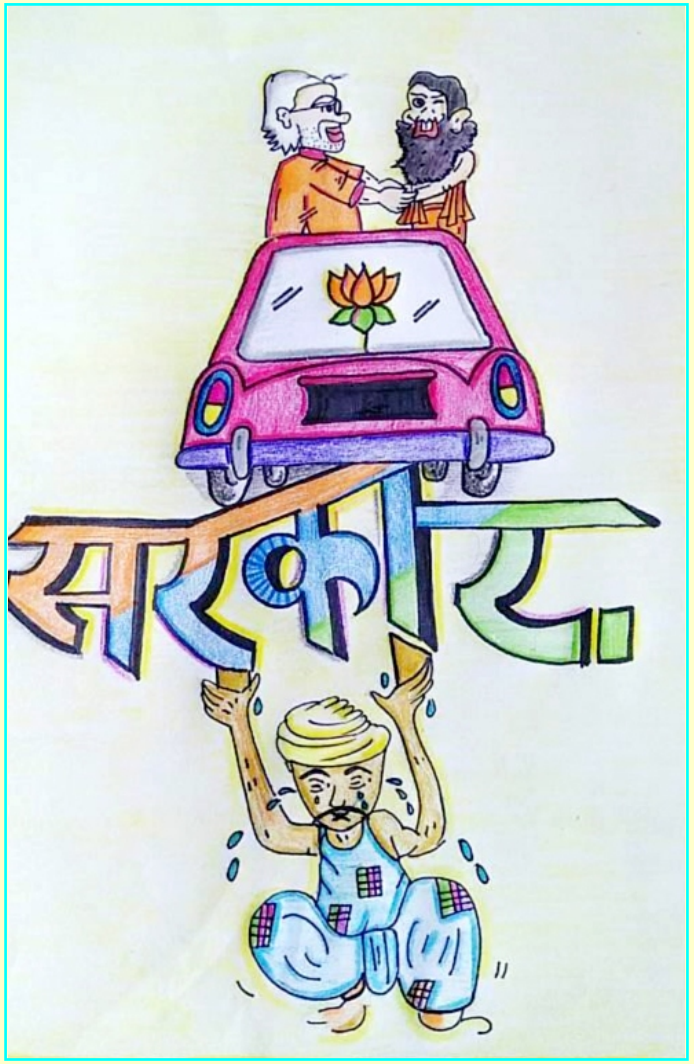

जसेकला

सर की कार, सर पर सवार

(कविता-संग्रह)

जसेकला

कोई भी रचना बिना किसी आज्ञा के मूलरुप से कहीं भी
लेखक के नाम से छापी जा सकती है।
(कापी लैफ्ट किताब)

लेखक	जसेकला
संपर्क	jasekla@gmail.com
प्रथम संस्करण	सितम्बर 2017
सहयोग राशि	तीस रूपये
शब्द संयोजन	
आवरण	निधि
प्रकाशन	लोक सेवक संस्थान, बरवाला, मुजफ्फरनगर - 251001 (उ.प्र.)
मुद्रक	प्रैसटाईम प्रिंटर्स, पटियाला (पंजाब)

समर्पित

आदरणीय (दिवंगत) अशोक सेकसरिया जी को

जो मुझे लिखने के लिए

हमेशा

प्रेरित और उत्साहित किया करते थे

मैं उनको गुरू समान मानता था

और

वो मुझे दोस्त की तरह प्यार करते थे

अपनी बात

मैं लिखता हूं क्यूंकि लिखना जरूरी समझता हूं–उन बातों की खिलाफत करने के लिए जो मुझे ठीक नहीं लगती और कभी उन बातों को भी लिखने का मन होता है जो मेरी तरह और लोग भी महसूस करते होंगे पर वे उन्हें नहीं लिख पाते। बच्चों से मिलने पर लिखता हूं, टहलते हुए कुदरत के नजारे देखने पर लिखता हूं, घर पर लिखता हूं, दफ्तर में लिखता हूं, खबरें सुनकर लिखता हूं, टीवी देखकर लिखता हूं, दिन में लिखता हूं, रात में लिखता हूं, सपनों की बातें लिखता हूं, हकीकत से रूबरू होकर लिखता हूं, परची पर लिखता हूं, कम्प्यूटर पर लिखता हूं। विकल्प की तलाश में लिखता हूं और अपनी समझ बढ़ाने के लिए लिखता हूं। दरअसल मैं सवाल उठाने के लिए लिखता हूं और लोगों को जगाने के लिए लिखता हूं।

इन्हीं कुछ रचनाओं को संजोकर प्रस्तुत है यह संकलन:

सर की कार, सर पर सवार।

सच तुम्हें बरदाशत नहीं होता
और झूठ मैं कह नहीं सकता
मौन में भी घुटता है मेरा मन
अब तुम्हीं बतलाओ मैं क्या करूं
कैसे जीऊं या फिर कहां मरूं।

क्रमिका

#	शीर्षक	पृष्ठ	#	शीर्षक	पृष्ठ
1	अ से अनार	9	28	Banned	38
2	चिंदा, चींची, और खोंखों	10	29	ब्लैकमेल	39
3	छोटू का सूरज	11	30	इलेक्शन मैनजमेंट सर्विस (EMS)	40
4	मिठ्ठू और बिट्टू	12	31	Law is not for law and layperson	41
5	रिमोट कंट्रोल	13	32	मां के नाम पर	42
6	किस पाले में खेलना है?	14	33	राष्ट्रभक्ति का लाइसेंस	43
7	और-रत	15	34	जाने से पहले भला करते जाओ	44
8	फरवरी का आशिकाना हफ्ता	16	35	सेल्फी की सनक	45
9	हाउसवाइफ या होममेकर	17	36	सफाई महोत्सव	46
10	यूनिफार्म सिविल कोड	18	37	गंदगी की शुरूआत	47
11	वर्किंग वुमैन	19-21	38	टॉयलेट कैम्पेन	48
12	सीख सके तो सीख	22	39	फिल्मी देशप्रेम	49
13	पिंजडा	23	40	केवल राजधानी की फिक्र	50
14	No to No	24	41	इमोशनल इंडिया	51
15	रिजल्ट	25	42	Rarest of rate	52
16	बचाओ भैया बचाओ	26	43	उड़ता पंजाब	53
17	फैसला मेरी जुबान में	27	44	पड़ोसी	54
18	मेरा और अंबानी का वोट	28	45	त्यौहार की बंदिशें	55
19	फंडरेजिंग डिनर	29	46	17 सितम्बर: विश्वकर्मा पूजा	56
20	दिल्ली के चुनाव से पहले	30	47	कुदरत का कारखाना	57
21	ओपिनियन पोल	31	48	शाकाहारी हिंसक	58
22	राजनीति	32	49	अंधश्रद्धा के आश्रम	59
23	वोटर की शपथ	33	50	अहं त्यागी	60
24	सर की कार, सर पर सवार	34	51	हम पंडित हैं	61
25	स्वराज	35	52	रामधुन	62
26	Politics and Poly-tricks	36	53	रक्षाबंधन	63
27	रैफरेंडम के नाम पर	37	54	जन्माष्टमी का व्रत	64
55	ईद मुबारक	65	83	ख्वाहिश	93
56	चंदा मामा दूर के	66	84	बारह छुटकियां	94-95
57	कंजक पूजा	67	85	खुद को ही सुधरना होगा	96
58	रोजगार	68	86	अड़तालीस चौपाइयां	97-99
59	आधा राम आधा रावण	69	87	स्मृतिपटल (Incumbency-Board)	100
60	1984	70	88	ई-नाम का चक्कर	101
61	पानी विच मीन प्यासी	71	89	मशीन देवी की आरती	102
62	जाति क्यूं नहीं जाती	72	90	Against Civilzation	103
63	कम्युनिटी, कम्यून और कम्यूनलिज्म	73	91	गुस्से की डिक्शनरी	104
64	राष्ट्रीय युवा दिवस पर	74	92	ठेके पर सरकार	105
65	भीड़ की बात	75	93	डेवलपिंग सिटी	106
66	Floating Population	76	94	भूमिदान से भूमिछीन की ओर	107
67	NRB: नॉन रेजीडेंट बिहारी	77	95	हमारी जमीन पर तरक्की तुम्हारी	108
68	बस देखते रहे तो	78	96	अर्थशास्त्र की संवेदनहीनता	109
69	Beggar also has right to choose	79	97	गरीबी रेखा	110
70	कलामुंडी खाने वाली लड़की	80	98	नया नोट	111
71	आलू बेचने वाले बच्चे	81	99	काला कोट टाई सफेद	112
72	बचपन बचाओ	82	100	सरकारी दमाद	113
73	सबका छोटू	83	101	मिडिलमैन	114
74	मई दिवस पर	84	102	बाजार की तराजू	115
75	Bystander apathy	85	103	महंगाई	116
76	संवेदना, बेबसी और मायूसी	86	104	खर्चा और तरक्की	117
77	आंखों देखा हाल	87	105	रेडीमेड	118
78	दफ्तर का काम	88	106	बचत और बजट	119
79	File and life	89	107	High-speed life	120
80	Paper-more	90	108	तुम हो मेरी मुठ्ठी में	121
81	कामकाज की सालाना रिपोर्ट	91	109	बुद्धूबक्से का कमाल	122
82	हर जगह खास होती है	92	110	बाबा का बिस्कुट	123

#	शीर्षक	पृष्ठ	#		पृष्ठ
111	मेरा भक्त	124	139	मौसम को तो बदलना ही है	153
112	हुदहुद की रात में	125	140	मौसम का हाल	154
113	जीवंतता	126-127	141	कार्य - कर्ता	155
114	डाल - डाल पर बसेरा	128	142	मेरा हमसफर	156
115	घर की मुर्गी दाल बराबर	129	143	काश	157
116	कोयल और कौआ	130	144	मिलना - जुलना	158
117	गोरखपुर की याद	131	145	दोस्त	159
118	यह कैसे संभव है	132	146	घर	160
119	मुफ्ती का मजा	133	147	आसान और मुश्किल	161
120	और सब ठीक - ठाक	134	148	नजर	162
121	अचानक याद कर लिया	135	149	डाक्टर साईदास	163
122	बातचीत करते हुए	136	150	Permanent Marker	164
123	दो अक्टूबर की छुट्टी	137	151	सबकी वहीं चिंतायें	165
124	तीस जनवारी	138	152	भूत की वापसी	166
125	जय माता दी	139	153	कुछ कुछ होता है	167
126	नेमड्रापर (यानी नाम टपकाने वाला)	140	154	16 लार्ड सिन्हा रोड	168
127	सोशल एनीमल	141	155	ओपनिंग और क्लोजिंग बैलेंस	169
128	अटकी हुई सुई	142	156	हे नीलकंठिनी	170
129	कबाड़ - 1	143	157	हिन्द द्वीप	171
130	कबाड़ - 2	144	158	स्व + आहा	172
131	सापेक्षता	145	159	समर्पण	173
132	इंजेक्शन और इंफैक्शन	146	160	सरहद	174
133	दर्द और हमदर्द	147			
134	सहनशीलता	148			
135	गर्मी का मौसम - 1	149			
136	गर्मी का मौसम - 2	150			
137	कुहरे का मौसम	151			
138	ठंड का मौसम	152			

अ से अनार : आ से आम

अ से अनार
अनार के आगे
डंडा लगा दो तो
आम बन जायेगा
आम के ऊपर
चोटी लगा दो तो
ओखली बन जायेगी
एक और चोटी बना दो
औरत बन जायेगी
अनार ही अमरूद है
बिंदी लगा दो तो
दोनो अंगूर बन जायेंगे
एक छोटे बच्चे को मैंने
जब कुछ ऐसे समझाया
तो पता नहीं उसने
मैडम को क्या बताया।

चिंदा, चींचीं और खोंखों

गोदी में उठाकर
मैं ले गया था उसे
एक शाम, बाजार घुमाने
रास्ते में पूछता रहा वह
बार-बार हर चीज का नाम
जब दिखाया उसे चांद मैंने
तो वह बहुत खुश हुआ
शायद यह देखकर और भी ज्यादा
कि चंदा हमारे साथ चल रहा था
अब जब भी मैं उससे मिलने जाता हूं
तो चिंदा कहकर वह मुस्कराता है
बाहर आकर चांद देखता है
मेरा झोला खुलवाता है
अपनी छोटी-सी किताब खोलकर
बंदर वाला पन्ना खोलता है
मंकी कहकर खों-खों करता है
और पेड़ पर बैठी चिड़िया देखकर
खुद चीं-चीं की आवाज निकालता है
जब हम उसकी बात नहीं समझते
तो भोले-प्यारे एक्शन करते हुए
गोल-गोल नन्हें हाथ घुमाता है
वह दो साल का मेरा दोस्त
आजकल बोलना सीख रहा है
हमारे जमाने में मोबाईल-कैमरे नहीं थे
पर क्या यह बच्चा महसूस कर पायेगा
दस साल बाद भी आज जैसा ही
अपनी फोटो एलबम टांगकर,
वह इतराकर चलने भी लगा है
देखना है
अमावस को वह क्या करेगा।

छोटू का सूरज

शाम को सूरज अपने घर चला जाता है
चंदा पहरेदारी के लिये आ जाता है
तारे उसकी मदद करते हैं
रात को सोया सूरज जब सुबह उठता है
तो अलसाई से उसका मुंह लाल होता है
उसकी चमक और चौंध धीमे-धीमे बढ़ती है
वह रोशनी फैलाता है
अंकल कहते हैं कि
धरती सूरज के चक्कर लगाती है
पर मुझे तो धरती घूमती नहीं दिखती
सूरज ही धीरे-धीरे चलता नजर आता है
चलते चलते जब वो थक जाता है
तो उदासी से उसका चेहरा लाल हो जाता है
हारा-थका सूरज आराम करने चला जाता है
जब तेज ठंड पड़ती है तो
वो रजाई में छुपा रहता है
और कुहरा पड़ने लगे तो कई बार
दिन भर बाहर भी नहीं निकलता।

मिठ्ठू और बिट्टू

एक था मिठ्ठू एक था बिट्टू
बिट्टू का घर बहुत बड़ा था
घर में एक छोटा पिंजडा था
पिंजडे में रहता था मिठ्ठू
बिट्टू को था उससे प्यार
मिठ्ठू भी था पक्का यार
बिट्टू जब जाता स्कूल
मिठ्ठू कहता था बाय-बाय
घर वापस जब आता बिट्टू
हैलो-हैलो करता था मिठ्ठू
एक दिन जब बिट्टू घर आया
मिठ्ठू ने उसको पास बुलाया
कान में बोला चोंच सटाकर:
तोता हूं पर रोता हूं
यह पिंजडा तो मेरी जेल
मेरा मन भी चाहे उड़ना
जैसे तुमको पसंद हैं खेल,
अगली सुबह था वीक का संडे
खाता था बिठ्ठू इस दिन अंडे
छुट्टी की वो मौज मनाता
बाहर आता कभी अंदर जाता
इंतजार करता था मिठ्ठू
दौडा चाबी लेकर बिट्टू
देख उसे खुश हो गया मिठ्ठू
खुल गया पिंजडा उड़ गया मिठ्ठू
उदास हो गया बेचारा बिट्टू
छत के ऊपर बैठा मिठ्ठू
हैलो-हैलो करता बोला:
फ्रीडम देने का तुमको थैंक्यू
रोज सुबह जब जाओगे स्कूल
बाय-बाय तुम्हें करूंगा बिट्टू।

रिमोट कंट्रोल

पिछले हफ्ते एक छोटे बच्चे ने मुझसे कहा:
अंकल, मेरे लिए एक ऐरोप्लेन लकर आना
नकली वाला, रिमोट से चलने वाला
उस वक्त तो सब हंस पड़े
पर मैं सोचता हूं
सही ही तो कहा उसने
सब रिमोट से चलता है
असली भी नकली जैसा ही है
किसके हाथ में रिमोट है
टीवी का, एसी का, कार का
मंदिर-मस्जिद और सरकार का
पीएम का, सीएम का, डीएम का
कोर्ट का, पुलिस का
लोकपाल का, राज्यपाल का
सीबीआई का, आईएसआई का:
अब तो प्रभु जी भी
ट्रेन का इनओगरेशन
रिमोट से बटन दबाकर करते है
हरी झंडी दिखाने की बजाय,
कौन खड़ा या खड़ी है परदे के पीछे
कुछ भी पता नहीं चलता
न ही असली सूरत नजर आती है
नाजुक हाथों से बटन दबाने पर
जब मनमाफिक चैनल लग जाता है
तभी हमें मजा आता है,
औरों की डोर हम सब
अपने हाथों में रखना चाहते है।

किस पाले में खेलना है?

कबड्डी का खेल चल रहा है
वो मुझको अपने पाले में
खींचना चाहते है
कोई शकल देखकर
कोई अकल सोचकर
कोई बुलाता है अपनी तरफ कहकर:
तुम तो हमारे जैसे हो
तुम शाकाहारी हो
तुम पगड़ी-दाढ़ी वाले हो
तुम तो सरकारी अफसर हो
तुम अलीगढ़ के रहने वाले हो
तुमने तो विज्ञान की पढ़ाई की है-
पर मुझे तो उस पाले में रहना है
जिधर खड़े हैं-
कमजोर: तन, धन और मन से
शोषित वंचित: राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से
गरीब, विकलांग, पटरी वाले
झुग्गियों में बसने वाले
कम संख्या में रहने वाले,
हाशिये के लोगों का साथ देना हैं मुझे,
बॉस के बेटे की शादी की बजाय
स्टॉफ की बेटी की शादी में
शामिल होना चाहता हूं,
मेरिट वालों को मैं कोचिंग नहीं दूंगा
मुझे तो मंदबुद्धि वालों को पढ़ाना है।

और-रत

मेरी मां भी वही करती थी
जो आज मेरी बहन करती है
रोटी पकाती है खाना खिलाती है
बर्तन धोती है, कपड़े धोती है
झाड़ू और पोंछा करती है
राशन का हिसाब रखती है
ज्यादातर घर में रहती है
इन घरेलू कामों को अक्सर
महिलायें ही करती हैं
चाहे अपने घर की या बाहर की
जिन्हें हम रख लेते हैं मेडसवैंट:
आम औरत की हालत वही है,
मेरी बेटी के लिये कुछ बदला जरूर है
वो को-एड स्कूल में पढ़ने जाती है
खुद ही स्कूटी पर बाजार चली जाती है
बस में भी सीटें आरक्षित तो होती ही है
महिलाओं के लिये
चाहे उस पर बैठे रहें आदमी बेशर्म होकर
मोबाईल पर लड़कों से बात कर सकती है
कपड़ों पर पहले जैसी पाबंदी नहीं है
उसकी मां उसे समझाती रहती है
कुछ घर का काम भी सीख ले बिटिया
तुझे पराये घर जाना है
जो न जाने तुझे कैसा मिले
नौकरी के क्षेत्र भी सीमित ही हैं
मध्यमवर्गीय लड़की के लिये:
स्टेनो-नर्स-रिसेप्शन-आपरेटर,
औरत का एक खास दिन मनाकर
हम उसे अहसास कराते हैं
किसी मजदूर की तरह
जो मजबूर है जीने के लिये
गैर-बराबरी के समाज में
पार्टियों में लेडीज फर्स्ट कहकर
हम थोड़ा शालीन बन जाते है
पर घर में औरतों को तो
रोटी लास्ट में ही मिलती है,
नुमाइश की चीज समझकर
चीफ गैस्ट को बुके स्त्री से दिलवाते है
सरस्वती वंदना की रस्म भी
वही अदा करती है,
जेंडर-बायस के आरोप से बचने के लिये
किताब के शुरू में ही लिख देते हैं कि
आदमी के आगे कोष्ठक लगाकर
इसका मतलब नारी भी समझा जाये,
घर के बहुत सारे काम तो
आदमी भी बखूबी कर सकते है
और उन्हें करने भी जरूर चाहियें जैसे
बच्चे की टट्टी धोना
चाय बनाना, खाना परोसना
कपड़े इस्तरी करना-
तभी अहमियत महसूस होगी
हमें घर संभालने वाली की।

फरवरी का आशिकाना इफ्ता

गिफ्ट की दुकान से खरीद हुआ
प्लास्टिक का गुलाबी फूल
बसंती के जुड़े में लगाकर
चॉकलेट देते हुये बोला भालू
चुंबन-आलिंगन की उम्मीद में
''ओ माई वेलेंटाइन, आई लव यू''
मिला जवाब करारा-सा बसंती से
'अरे, मेरे इडियट और मॉडर्न लालू
इससे अच्छा तो ले आते
सब्जी मंडी से
फूलगोभी और दो किलो आलू!'

हाउसवाइफ या होममेकर

वो सुबह सबसे जल्दी उठ जाती है
बच्चों को नहलाती है
नाश्ता तैयार करती है
सबको चाय-दूध पिलाती है
जब सब चले जाते हैं तो
फटाफट अपना ब्रेकफास्ट निपटाकर
घर की सफाई में लग जाती है
कपड़े धोती है-बर्तन मांजती है
कुछ देर सुस्ताती है
जी बहलाने को टीवी देख लेती है
या मोबाइल पर कैंडीक्रैश खेल लेती है
फिर लंच की तैयारी में जुट जाती है
शाम को भी यही होता है
डिनर के बाद
'दिया और बाती' जैसे सीरियलो में
अपने अधूरे सपनों को तलाशती है
फिर शुरू हो जाती है
अगले दिन की प्लानिंग :
नाश्ते में क्या बनाना है,
पति ऑफिस जाते हैं ड्यूटी पर
बच्चे स्कूल जाते हैं पढ़ने
पर उसकी तो यही ड्यूटी है,
सडे को तो
और ज्यादा काम होता है,
अब तो पड़ोसिनों से गपशप भी
कभी-कभार ही हो पाती है।

यूनिफार्म सिविल कोड

मत बनो चालाक
तीन बार बोल दने से
नहीं दे दूंगी तलाक
चाहो तो बन जाओ
ऐसे ही मेरे
मैं नहीं लूंगी सात फेरे
बदलवा दो चाहे मेरा धर्म-
न हर मुस्लिम चार बीबियां रखता है
न ही हर हिन्दू के बस दो बच्चे होते हैं
चाहे कब्र में दबाओ
या चूल्हे में जलाओ
मैं कहूंगी वही जो ठीक लगेगा
मैं करूंगी वही जो मुझे जंचेगा
मुझे न खाद्य पंचायत की सुननी है
न मौलवी-पंडितों की माननी हैं
मुझे शादी का लाइसेंस थमाकर
तुम मेरी आवाज को
साइलेंस नहीं कर सकते
कोई भी कानून बनाओ
पर मुझको भी हक है
अपनी मर्जी से जीने का
मुझे ही ससुराल क्यूं जाना पड़ेगा
मेरा सरनेम ही क्यूं बदलेगा
शादी और बच्चे हम दोनों के हैं
औरत और आदमी बराबर हैं
दोनों जिम्मेदार और हकदार हैं
मुझ पर सियासत न करो
खुदा के वास्ते कुछ तो डरो।

वर्किंग वुमैन

मैंने पढ़ाई की थी,
ऊँची कक्षा तक
वो भी ठीक-ठाक नहीं
अच्छे प्रतिशत से
सोचती थी-अफसर बनूँगी
रौब होगा, घंटी होगी
फाइलों पर बस चिडिया घुमानी होगी
घर लौटूँगी तो
कहेंगे बाबू जी
बेटी को काम में मत लगाओ
आराम करने दो
दफ्तर से हारी-थकी लौटी है।
नौकरी मिल भी गयी थी
बड़ी खुश थी मैं
नाचती-कूदती, इतराती-शमाती
सुबह तैयार होती
सजती जैसे बस
मैं ही दूल्हन हूं
ऑफिस के गेट पर
पहुँचते ही
सभी मुझे निराहते-घूरते/सलाम करते
मैं मुस्कराती,
धीम-धीमे कदमों से
गजगामिनी की चाल में
अपने कक्ष तक पहुँचती
बजाती घंटी
''पानी लाओ ठंडा
बड़े बाबू को बुलाओ
पंखा जरा कम कर दो''।
शुरू हो जाता दफ्तर का काम-काज
मेरे बॉस भी आ जाते आधे घंटे बाद
मुझे बुला लेते चैम्बर में
और पिलाते चाय,
मीटिंग में
दफ्तर की बातें भी होती
पर ज्यादातर गप-शप ही
कभी-कभी मैं झेंप भी जाती
जब वे कुछ बहकी बातें करते
मुझे अच्छा भी लगता
मेरा प्रभाव है
नीचे और ऊपर
घर में और दफ्तर में।
मैं नशे में चूर थी
जैसे दुनिया में बस मैं ही थी
केंद्र, परिधि और विस्तार।
फिर मेरी शादी हो गई
पर मेरी भी शर्त थी
नौकरी नहीं छोड़ूँगी,
ससुराल वाले राजी भी हो गए
पति ने खास ऐतराज न किया
उनका दफ्तर
मेरे दफ्तर से कुछ दूर था
मेरे पिताजी ने दहेज में
दामाद जी को कार दी
सोचा होगा: दोनों को सहूलियत होगी
कुछ दिन आराम रहा भी
मुझे बस की भीड़ से राहत मिली
मैं समय से पहले ही दफ्तर पहुँच जाती
कुछ रौब भी बढ़ गया था
कार से उतरते ही
मेरा कद और अकड़ ऊँची हो जाती
अब मैं पूरी तरह अफसर थी

शाम को लौटते समय
चपरासी आकर बताता
साहब आ गए हैं
इंतजार कर रहे हैं
मैं जल्दी-जल्दी फाइलें
इधर-उधर पलटकर
कही दस्तखत करती
स्टॉफ को आदेश करती
गलियारे में भी काम-काज की हड़बड़ी
''यह काम आज शाम को ही करके घर जाना
उस फाइल की नोटिंग में यह ध्यान रखना
कल सुबह जल्दी आ जाना
उससे फोन पर बात कर लेना
अभी मैं चलती हूँ-अच्छा''
घर पहुँचते दोनों साथ-साथ
कभी रास्ते में कुछ खा-पी भी लेते
या घर पैक करा कर कुछ ले जाते
माँ (मेरी सास) और पिता जी (मेरे ससुर)
हमारा इंतजार कर रहे होते
माँ चाय बनाती, हम हाथ-पैर और मुँह धोते
इधर-उधर की बातें करते
कुछ आफिस की, कुछ घर की
फिर टीवी पर सीरियल चला देते
खाना बनता-कुछ मदद मैं भी कर देती
सुबह तो न कर पाती
पर अगले वर्ष मुन्नू आ गया
छुट्टियाँ भी मिल गयीं
मातृत्व अवकाश पूरे छः महीने का
फिर नौकरी पर पहुँची
अब जिम्मेदारियाँ बढ़ गयी हैं
और उनका स्वभाव व प्यार भी बदल गया है
सुबह दफ्तर छोड़ने में ना-नुकुर करते हैं
खीझते हैं-''तुम समय से तैयार क्यों नहीं होती
शाम को भी ऑफिस से ही फोन कर देते हैं
तैयार रहना मैं निकल रहा हूँ
गाड़ी में बैठते तो भी
या तो बात न करते
या फिर चिड़चिड़ापन
घर में भी माँ
न अब मन से चाय बनाती
न खाना, बस मुन्नू के कारण
दिन-भर व्यस्त रहने का
और परेशानी का
उलाहना ही देती रहती
कुछ घर पर भी ध्यान दिया करो बहू;
मैं बेटी नहीं, बहू थी
माँ भी एक बेटे की
जिसकी परवरिश तो मुझे करनी ही चाहिए
मेरी मुस्कराहट जाती रही
दफ्तर में भी गुस्सा और इल्लाहट रहती
ऑफिस में भी बार-बार
फोन आते रहते घर से:
मुन्नू उल्टी कर रहा है
उसे दस्त हो गए हैं
वह रोना बंद ही नहीं कर रहा,
कभी सोचती-नौकरी छोड़ दूँ
पर उनको यह भी मंजूर नहीं
तनख्वाह जो मिलती है दोगुनी
और समाज में प्रतिष्ठा भी-
साहब की पत्नी भी बड़ी अफसर है,
घर संभालती हूँ
जिम्मेदारियाँ भी निभाती हूँ
दफ्तर बस मजबूरी है
जिसे रिटायरमेंट तक झेलना है
कैसे कटेगी यह जिंदगी
अभी तो एक मुन्नू ही है

यदि मुनिया भी आ गयी अगले बरस
यदि सास गुजर गयी
जब मुन्नू स्कूल जाने लगेगा
कैसे.....
समय यूँ ही निकल जाएगा
बेटी, माँ, बहू, सास
सब मैं बन जाऊँगी
बड़ी अफसर भी
पर लोग यही कहेंगे
तुम महिला हो
तुम्हारी सही जगह घर है
दफ्तर से तो तुम आर्थिक आजादी पा लेती हो
रहना तो तुम्हें गुलाम ही है
यदि शादी नहीं करती
तो दफ्तर में क्या स्थिति और कुछ होती
मैं बेहतर कार्य करती
उलझन और तनाव भी न होता
बस लोग मुझे घूरते रहते
मुझसे उम्मीदें रखते
मेरे बारे में किस्से गढ़ते
मैं फेमिनिस्ट हो जाती
स्त्री अधिकारों की हिमायती
तेज-तर्रार और लडाकू औरत
क्या होता
पर है अभी जो
यही यथार्थ है
पिस रही हूं
घर और दफ्तर के बीच:
अंदर और बाहर
माँ और अफसर
पत्नी और सेक्रेटरी
पति और बॉस
बच्चे और स्टॉफ:
मैं इंसान नहीं एक स्विच हूँ
बदलती अपनी पोजीशन
खुद के मानस को दबाकर,
टूटती प्रतिपल और
करती पूजा ईश्वर की
मुझे हिम्मत दो
जीने की, निभाने की।

सीख सके तो सीख

कुछ भी नया सीखना मुश्किल होता है
सिखाना तो और भी मुश्किल होता है
पर सीखना तो फिर भी पड़ता ही है
इसी दुनिया में ही आकर सीखते हैं
हम अपने अभ्यास और प्रयास से
कोई सीख जाता है जल्दी-कोई देर से
कोई करता है ज्यादा गलतियां-कोई कम
पढ़-रटकर, अटककर या भटककर
करनी पड़ती है मेहनत सीखने में,
मां के पेट से सीख कर कोई भी नहीं आता
सबका हुनर अपना और अलग ही होता है
ढेर सारे गुरू होते हैं सबकी जिंदगी में
न कोई सब कुछ जानता है-न जान सकता है
न कोई खुद को जगतगुरू कहला सकता है
मुझको भी अभी बहुत कुछ सीखना है
इसलिये नितनये शिक्षक तलाशता हूं
मैं भी, दत्तात्रेय की तरह।

पिंजड़ा

अपने अपने पिंजड़े हैं
सबके:
बाबू जी के लिए दफ्तर
लाला जी के लिए दुकान
छोटू के लिए उसका स्कूल
हाउसवाइफ के लिए रसोई,
बाहर निकल नहीं पाते
कुछ और सोच नहीं पाते
घूमघाम कर रोज वहीं
वापस आ जाते हैं
पंख फडफडाते हैं पर
उड़ने की छटपटाहट
बनी रहती है।

No to No

जहां नो एंट्री का बड़ा बोर्ड लगा होता है
अक्सर वहीं से सब प्लेटफार्म में घुसते है
मोटे लाल अक्षरों में नो स्मोकिंग लिखा है
वहीं सिगरेट के धुंये से छल्ले उड़ाये जाते है
मूतते-थूकते है बेझिझक, चलते हुये रोड पर
सुलभ शौचालय पास बने होने के बावजूद,
कानून बनाने वाले भी खुश हैं ताकत पाकर
पकड़ लें किसी को या बख्श दें कुछ ले-देकर,
थियेटर और मीटिंग में बजते ही रहेंगे मोबाइल
अनुरोध व आदेश चाहे जितना भी कर लो,
वर्जनाओं को तोड़ने में मजा आता है सबको
आदम ने फल चखकर आदत जो डाल दी है
नो-पार्किंग में वीआईपी की गाड़ी खड़ी होती है।

रिजल्ट

अच्छा आ गया तो
कहेंगे सब-
बड़ा मेहनती था
इंटेलीजैंट है
बहुत पढ़ता था
मन लगाकर
वरना
सुनने को मिलेगा
ऐसे ही बैठा रहता था
किताब खोलकर,
अंक में बैठाते है
समाज के लोग
मेरे अंक देखकर
मेरे ग्रेड सुनकर,
हिन्दी में अंक
कितने भी हो
पर गणित में
हुए कम तो
मायूस हो जाते हैं
मेरे भविष्य को लेकर
हां परसेन्टेज बढ़ाने के लिये
संस्कृत विषय रखतें हैं कई बारहवीं में
वैसे ही जैसे
आईएएस में ऑपश्नल
एंथ्रोपोलोजी का।

बचाओ भैया बचाओ

जब से मैंने होश संभाला है
कई आंदोलन सुनता आया हूँ-
आजादी बचाओ
नर्मदा बचाओ
शेर बचाओ
बचपन बचाओ-बेटी बचाओ
पानी बचाओ-बिजली बचाओ
सोचता था
क्या वाकई कुछ खोने का खतरा है
पर अब लगने लगा है
कुछ गड़बड़ ज्यादा ही हो रही है
चारों ओर अफरा-तफरी फैल रही है।
दोस्तों, आओ कुछ करो
जो कुछ बचा सकते हो
उसको जल्दी बचाओ
बिकने से बचाओ
लुटने से बचाओ
जमीन बचाओ-जंगल बचाओ
कुदरत बचाओ-इज्जत बचाओ
जिंदगी बचाओ
नहीं तो बचाने को भी
कुछ नहीं बचेगा।

फैसला मेरी जुबान में

मैं भारत का रहने वाला हूं
अपनी भाषा में लड़ने का
कुदरती हक हासिल हैं मुझे
मैं कुर्सी की इज्जत करता हूं
पर तुम्हें 'लार्ड' नहीं कह सकता
न ही अंग्रेजी में पैरवी करूंगा
तुम जज हो भगवान नहीं,
आखिर मुकदमा क्या है
वकील क्या कहता है-
सबको समझ तो आना चाहिये
सुनो कोर्टवालो, तुम्हें अब
भाषा और भूषा बदलनी होगी-
मुझे खैरात नहीं इंसाफ चाहिये।

मेरा और अंबानी का वोट

कल मैंने संविधान पढ़ा
तो साफ पता चला
अंबानी और मेरा वोट एक ही गिना जायेगा
अंबानी मेरा वोट नहीं खरीद सकता
अंबानी मेरा वोट नही डाल सकता
अंबानी हवाई जहाज से पोलिंग स्टेशन पर नहीं उतरेगा
अंबानी की भी उंगली पर निशान लगेगा
अंबानी भी ईवीएम का बटन ही दबायेगा
फिर भी मेरे और अंबानी के बीच में
कुछ तो फर्क है ही।

फंडरेजिंग डिनर

डिनर करने की कीमत है
सिर्फ बीस हजार
साथ डांस करना चाहते हो
तो देने होंगे पचास हजार
हमें वोट चाहे मत देना
पर चुनाव के लिए
नोट तो दे दो
फंडरेजिंग के लिए
हम कुछ भी करने को तैयार हैं
रब्बी की पॉप कनसर्ट करायेंगे
जरूरत पड़ी तो
फिल्मी हीरोईनों की तरह
आपके बेटे की
शादी में भी आयेंगे।

दिल्ली के चुनाव से पहले

कोई चाय पिला रहा है
कोई हाथ हिला रहा है
पर तड़के सुबह रोज
रामू निकल पड़ता है
बिना टोपी लगाये
दिल्ली की सड़कें साफ करने
क्यूंकि लंबी झाड़ू ही तो
रोजी-रोटी का औजार है
उसके लिए
न कुछ बदला है न ही उम्मीद है
सिर्फ उसकी झाड़ू का मजाक उड़ा है
जैसे हरिजन कहकर हुआ था कभी,
साफ सड़क पर वाहन दौड़ते है
कूड़ा फेंका जाता है
सबको रामू के रोजगार की फिक्र है
और ठेकेदार के कांट्रेक्ट की भी।

ओपिनियन पोल

जो भी आता है मांगने
मैं उसको हां कह देती हूं
क्यूंकि न कहने पर वो
मेरी राय बदलने की
कोशिश करने लगता है
जब सर्वे वाले आते हैं
मुझे पता लग जाता है
उनके सवालों और लहजे से
वे किसकी तरफ से आये हैं,
हों कितने भी समझदार वो
मैं भी बेवकूफ तो नहीं हूं
आखिर मुझे ही तो खोलनी है
उनके दावों और वायदों की पोल।

राजनीति

बीजेपी का मोदी मुझे नहीं भाता
जो गोधरा के लिये जिम्मेदार है
कांग्रेस को वोट नहीं दे सकता
क्यूंकि वह इंदिरा की पार्टी है
सपा से खड़ा उम्मीदवार गुंडा है
माया ने भी मूर्तियां ही लगवाई
लैफ्ट के जीतने के आसार नहीं है
बाकी सब निर्दलीय हैं उनसे मुझे क्या
लोकतंत्र में अपने कीमती वोट की
अहमियत को मैं खूब समझता हूं
नोटा दबाकर अपना वोट
खराब करना नहीं चाहता हूं।

वोटर की शपथ

मैं शपथ लेता हूं
वोट डालने की
अपने आलस्य के बावजूद
यकीन करते हुए कि
मेरा वोट ला सकता है
चुनाव में बदलाव
बेहतर कल के लिए
तब गर्व से कहूंगा मैं
होठों पर अंगुली रखते हुए लोगों से
जो सिर्फ आलोचना और बहस करते है-
मेरी अंगुली का निशान तो देखो
वोट लोकतंत्र का सबसे बड़ा हथियार है
उसे समय पर इस्तेमाल करना मेरा हक है
उसका सही इस्तेमाल करना मेरा फर्ज है।

सर की कार, सर पर सवार

मदमस्त हथिनी जैसी
झूम-झूम कर चलती है
नशे में धुत्त और चूर
ताकतवर की सत्ता
परवाह नहीं करती है
सड़क की-लोगों की,
कुचलती ही रहेगी वो
खिलाफती आवाजों को
जरूरी लगा उसको तो
भून डालेगी इंसानों को
बंदूक की गोलियों से
छोटे-बड़े जलियांवाला बाग
बनते ही रहेंगे धरती पर
सत्ता चाहे कोई हो
किसी भी रंग-रुप की
किसी भी देश-भूप की,
हाथ में बैशाखी लेकर तो
आम आदमी ही चलेगा
राजाओं को पालकी में
बैठाकर खींचते हुये
शायद इसीलिये
कुर्सी के नशे का
मजा लेने के लिए चलती रहती है
सांठगांठ और जोड़तोड़
हर इलेक्शन में
चाहे वह गुरूद्वारे का हो
मुहल्ले की सोसाईटी का
सरकारी यूनियन का
गांव की पंचायत का
या फिर संसद का।

स्वराज

सभी को चाहिए स्वराज
पर सिर्फ अपने लिए
सब महत्वाकांक्षाओं की लड़ाई है
अपने लिए कोई तानाशाही पसंद नहीं करता
पर दूसरों को वही गुलाम बनाना चाहता है
सब अवसरवादी है
एक दूसरे का इस्तेमाल करते हैं
बस अपनी तूती बजाते हैं
अपनी ही चलाना और चलवाना चाहते हैं
चापलूसों को साथ रखना चाहते हैं
दोस्ती इन्हें निभानी नहीं आती
घर छोड़ कर चले गये
अब घाट पर भी लड़ रहे हैं
झूठी इगो में जी मर रहे रहे हैं-
हम ज्यादा अच्छा बोल लेते है
हम ज्यादा अच्छा लिख लेते है
हम रिसर्च स्कॉलर हैं
हम बेहतर ऐनेलिसिस कर लेते हैं,
लॉटरी लग गई आप की
तो चिढ़ रहे हैं-
हममें भी दम था और दम है
खूब तजुर्बा हैं
हम किसी से कम नहीं है,
कटो-मरो-लड़ो
एक दूसरे पर कीचड़ उछालो
जासूसी करो-वीडियो बनाओ
पर प्लीज मेरे यकीन को न तोड़ो
वरना सियायत में वही लोग हावी रहेंगे
जिनसे निजात पाने को
मैंने आपको चुना था
आखिर सही ही कहती थी दादी:
तू भी रानी मैं भी रानी
कौन भरेगा घर का पानी!

Politics and Poly-tricks

तुम नहीं पूछ सकते हमसे
देर से ऑफिस आने की वजह
जल्दी वापिस जाने की वजह
न ही हमें रोक सकते हो
संसद में हुड़दंग मचाने से
गुनाह करे भी हों तो क्या
आखिर हम तुम्हारे आका है
तुम्हारी क्या औकात
हमसे सवाल करने की
हम कानून बना सकते हैं
तुम्हें काबू में रखने के लिए,
और खुद बेकाबू रहने के लिए
हम विशेष हैं
तुम सिर्फ शेष हो!

रैफरेंडम के नाम पर

अगर तुम न भी कहोगे
तो हम हां ही मानेंगे
क्यूंकि हम फैसला तो कर ही चुके हैं
बस तुमसे तो हामी भराना चाहते हैं
अपनी मुहर लगा दो
ताकि हमारी भी लाज रह जाय
आपकी राय भी हमारी हो जाय
अरे काहे इतना सोचत हो भई
हम कारण थोड़े ही पूछ रहे हैं
और फिर
तुम दिन को अगर रात कहोगे
तो हम मान थोड़े ही लेंगे,
उनको नवनिर्वाचित अध्यक्ष लिख चुके हैं
हम अपनी सुबह बनाई रिपोर्ट में
जिसे जनरल बॉडी की मीटिंग में हुआ
सर्वमान्य फैसला दिखाकर
अखबार में छापने के लिये देना है,
उनके नाम पर हाथ उठा दो न
प्लीज हां कर दो न
बाकी बातें बाद में कर लेंगे,
हमने आपकी तरफ से
ऑनलाइन पिटीशन बना दी है
बस इसे क्लिक करके साइन कर दो।

Banned

खाने पर बैन
बोलने पर बैन
मीडिया पर बैन
लेखकों पर बैन
राष्ट्र और संस्कृति की आड़ में
लोकतंत्र पर बैन
जो हमारी न सुने उस पर बैन
जो हमारी न सुनाये उस पर बैन
जो हमसे न डरे उस पर बैन
जो हमसे सवाल करे उस पर बैन
सिर्फ देंगे आपने दोस्तों को चैन
बाकी सब पर होगा बैन ही बैन!

ब्लैकमेल

गुंडागर्दी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
और हम इसे बखूबी करते रहेंगे
हम अनुशासन में नहीं रहेंगे
प्रशासन की कभी नहीं सुनेंगे
वक्त के बाद काम पर आयेंगे
वक्त से पहले घर भाग जायेंगे
फर्ज निभाना हमारा फर्ज नहीं है
हमें तो हक से ज्यादा चाहिये
कैसे भी हो हमारी बात मानिये
रास्ता और तरीका तुम्हें ढूंढना है
हमको तो बस तुम खुश रखे-रखो
वरना पंद्रह अगस्त को
ब्लैकबैज पहनकर आयेंगे,
हम तो सरकारी दामाद हैं
और पूरी तरह आजाद हैं।

इलेक्शन मैंनेजमेंट सर्विस (EMS)

हमें हायर कर लो
हम आपकी पार्टी का नामकरण करेंगे
कोई इमप्रेसिव चुनावी निशान चुनेंगे
तुम्हारे लिए भाषण लिखेंगे
कैची स्लोगन और गाने बनायेंगे
एसएमएस भेजभेज कर वोटर को
इतनी बार दिमाग में घुसायेंगे कि
जब वह मशीन के सामने पहुंचे
तो खुद-ब-खुद
आपका ही बटन दबे
जैसे सफेद कमीज वाला एड
टीवी पर बारंबार देखकर
हर कोई दुकान से
सिर्फ सर्फ ही खरीदता है
हम तो वोट नहीं डालते
पर पढ़े-लिखे तो वोट देंगें ही
हमारा तुम्हारे साथ होना सुनकर
गरीब मजदूरों से भी
जातिधर्म के नाम पर वोट डलवायेंगे
हमें आंकड़ो को एनेलाइज करना बखूबी आता है
हमने एमबीए में इसके काफी तरीके सीखे हैं
बस हमारी संस्था की फीस थोड़ा ज्यादा है क्यूंकि
हमारे एमप्लायी आईआईटी/आईआईएम पढ़े हैं।

मोटी तनख्वाह वाली नौकरी छोड़कर
विदेश छोड़कर देशहित को आये हैं
हम कोर प्रोफेशनल हैं
हमने किसी का जिताया है
तो किसी का हरवाया भी है
पैसा ही हमारी विचारधारा है
जो हमें ज्यादा कीमत देगा
हम उसी को कनसलटेंसी देंगे
हमारा ऑफर सबके लिए खुला है
कैसे भी कैंडीडेट उतारो मैदान में
हम मीडिया मैंनेजमेंट में माहिर हैं
आपकी उम्मीद से ज्यादा वोट दिलवायेंगे
डेमाक्रसी को बिग-बिजनेस बनायेंगे।

LAW is never for Low and Layperson

कोई कहता है
संविधान ही गलत है
कोई कहता है
क्रियान्वन गलत है
कोई लड़ता है
कानून बनवाने के लिए,
कोई लड़ता है
उसे बदलवाने के लिए
और कोई जूझता है
लागू कराने के लिए,
सब लड़ रहें हैं
अपने नाम के लिए
मगर लोग मर रहे हैं
जीने के लिए,
किसी भी कानून को बनाते हुए
लोकहित की दुहाई दी जाती है
नीतियां कितनी भी अच्दी हो
अगर नीयत साफ नहीं तो
अर्थ का अनर्थ हो जाता है
सब कुछ व्यर्थ जो जाता है
कानून का इस्तेमाल
वो ही कर पाते हैं
जिन्हें उसकी पेचीदा भाषा
समझ में आती है

जो लिखना जानते हैं,
अपनी अपील पर
सीधे-सीधे लोगों से
दस्तखत कराके
उसे नत्थी कर देते हैं
दावा मजबूत कर लेते है
पैरवी करा पाते है
लॉबी बना पाते हैं
महंगे वकील रख लेते हैं,
कोर्ट कचहरी जाने में
आम आदमी की तो
जान ही निकल जाती है।

मां के नाम पर

गाय को माता मानते हैं
गंगा को मैया कहते है
माता के बुलाने पर
रेलगाड़ी से वैष्णोदेवी के तीरथ को जाते हैं
रैलियों में जोरशोर से वंदेमातरम के नारे लगाते हैं
पर उन्हें भैंस और यमुना मासी भी नहीं लगतीं
मदरटेरेसा की नीयत पर भी सवाल उठाते हैं
वे कट्टर मातृभक्त हे
उनसे तुम सावधान रहना
वो मां की गाली दें तो सह-सुन लेना
पर उनसे पंगा भूलकर भी मत लेनाा
क्यूंकि वो मां की बहुत इज्जत करते हैं।

राष्ट्रभक्ति का लाइसेंस

वंदे मातरम बोलोगे तो
यहां रहने का हक मिलेगा
पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाओगे तो
तुम्हें राष्ट्रभक्त होने का लाइसेंस मिलेगा
मानवाधिकार की बात करोगे तो
तुम पर शक किया जायेगा
हमारे संघ के खिलाफ बोलोगे तो
तुम्हें मारापीटा जायेगा
अभियोग भी हम लगायेंगे
फैसला भी हम हीं सुनायेंगे
और सजा तो तुम्हें हम दे ही चुके
गुनाह साबित होने से पहले,
हम ही सरकार हैं
हम ही सरदार हैं
बाकी सब बेकार है
कैडर में मैं भी खो गया
तुम तो कभी थे ही नहीं
बस हम ही हम हैं
मानो हमारी बात तो भी सही
न मानो तब भी होगा तो यही
हम हिंदूस्थान के ठेकेदार हैं।

जाने से पहले भला करते जाओ

आजकल सरकार कुछ ज्यादा ही मेहरबान है
अधिकारों की मानो बरसात हो रही है
मुफ्त शिक्षा का कानून बन गया
रोजगार की गारंटी भी मिल गई
राइट टू इन्फामेशन तो लागू है ही
अब खाने की सुरक्षा की तैयारी है
जैसे-जैसे आ रहा है नजदीक फेयरवेल
वेलफेयर की नई योजनाएं बन रही हैं।

सेल्फी की सनक

जब घूमने जाता था
ग्रुप में मैं
तो फैमिली वाले दोस्त
अजीब सा बरताव करते थे
बीबी-बच्चों के साथ खड़े होकर
मुझे कैमरा पकड़ा देते थे
उसका बटन दबाने के लिए
मेरा मन रखने को
बाद में फ्लैश चला देते थे
पर मुझे अपना फोटो
उनसे कभी नहीं मिला
सोचता हूं
सेल्फी का अविष्कार
मेरे जैसे
बैचलर लोगों के लिए ही हुआ है
जो केवल सेल्फ हैं
सेल्फी उनकी पत्नी है
पर मेरे पास न स्मार्टफोन है
न ही मैं वाट्सएप पर हूं
अपने मुंह मिंया मिठठू बनना
मुझे अच्छा नहीं लगता
बचपन में गांव के बच्चे
पांव का तलवा दिखाकर
चिढ़ाते थे आपस में
जैसे आज कोई कहे
आत्ममुग्ध पीएम साहब से:
''ले फेंकू अपना फोटू खींच।''

सफाई महोत्सव

आज मंत्री जी स्टेशन आयेंगें
झाड़ू हाथ में उठायेंगे
अफसर भी वहां जायेंगे
हार माला पहनायेंगे
सब पूड़ी-जलेबी खायेंगे
गंद वहां फैलायेंगे
घर में काम करें न जो
वो सफाई कैसे करायेंगे
बस 2 अक्टूबर की ड्यूटी
ससुराल में लगवायेंगे
जश्न मिलकर मनायेंगे
कचड़ा तो वही उठायेंगे
जिनको
ठेकेदार सस्ते में पायेंगे।

गंदगी की शुरुआत

सड़क पर टलहते हुए
मैंने वहां थूका
बच्चे ने मूता
मैडम ने कूड़ा फेंका
औरों ने मान लिया
यह कोना इसीलिए बना है
उसका वही इस्तेमाल होने लगा
धीरे-धीरे ढेर बढ़ता गया
अब जब निकलता हूं
नाक पर रूमाल रखकर
उस जगह से तो
कोसता हूं खुद को
गंदगी की शुरूआत
करने के लिए
और उन सभी को
जो टहल रहे थे उसी सड़क पर
पर नहीं टोका हमें किसी ने,
गंद फैलाने वाले तो हैं इतने
किंतु सफाई करने वाले कितने।

टॉयलेट कैम्पेन

चाहें हों वेस्टर्न या इंडियन
पर हिन्दू-मुस्लिम टायेलेट
अलग बने हुए कभी नहीं सुने
हां, यह बात और है कि
अफसरों और स्टॉफ के लिए
अलग बना दिए जाते है
मूतने और हगने के कमरे
जनाना-मर्दाना की तर्ज पर,
जब कभी देखता हूं मैं
रेल की पटरी किनारे
लोटे में पानी लेकर
जाती औरतों को
शौच करने के लिए
खुले मैदान में-
तो मुझे मंदिर में
महादेव पर लोटे से
पानी चढ़ाने वाले
भक्तजन
याद आ ही जाते है।

फिल्मी देशप्रेम

सुप्रीम कोर्ट ने फरमान निकाल दिया है
अब से राष्ट्रगान बजाना अनिवार्य होगा
सिनेमा हॉल में,
चाहे कैसी भी मूवी लगाओ
किसी भी ग्रेड की
कितनी भी मंहगी टिकट रखो
बस जन-गण-मन बजाओ
कुछ भी दिखाने का लाइसेंस पाओ
लोगों को राष्ट्रभक्त बनाओ।
वो दिन अब असंभव नहीं
जब सरकारी दफ्तरों में ग्यारह बजे
राष्ट्रगान का साइरन बजा करेगा
और सब कर्मचारी खड़े हो जाया करेंगे,
वैसे योग को तो कई जगह
कमपलसरी कर ही दिया है सरकार ने,
प्रतीकात्मकता ही होड़ में सब
एक-दूसरे को मात देने में लगे है।

केवल राजधानी की ही फिक्र

हुजूर की नाम में बहुत धुंआ लगता है
खासकर दो बार:
एक तो जब अपने घर के एसी से बाहर निकलते हैं
एसी गाड़ी में बैठने के लिए
और दूसरा जब गाड़ी से बाहर पैर रखते हैं
एसी कोरीडोर से होकर
अपने एसी चैम्बर में घुसने के लिए
जहां बैठकर उन्होंने आज फैसला सुनाया-
सारी डीजल की गाडियां बद कर दो
कल से नहीं, आज-अभी से ही-
लोगों ने पूछा-
तो उन गाड़ियों का क्या होगा?
तो बोले: वो तुम जानो तुम्हारा काम जाने
कहीं भी चलाओ या भाड़ में जाओ
पर दिल्ली में नहीं चलेंगी
उन्हें गाजियाबाद और फरीदाबाद में ले जाओ
अलीगढ़ और बल्लभगढ़ की सड़कों पर दौडाओ
बस हमारी नजरों से दफा हो जाओ-
कोर्ट का यह फरमान और फतवा हैं,
उनकी नाक में धुंआ बहुत लगता है
दिल्ली की आबोहवा की
मेरे हुजूर को सचमुच बड़ी फिक्र है।

इमोशनल इंडिया

हम बहुत भावुक लोग है
जिसकी इज्जत करते है
उसे भगवान बना देते है
अर्श पर बैठा देते हैं
चढ़ते सूरज को तो सलाम करते हैं ही
ढलते सूरज को भी हम प्रणाम करते हैं
नाम के आगे 108 श्री जोड़ने में
हम झिझकते नहीं है
रिकार्ड तो टूटने के लिए ही बनते हैं
पर उसको बनाने वालों को हम पूजते हैं
चाहे वे सचिन हों या अमिताभ या फिर अन्ना,
वैसे हमने कई लोगों को
फर्श पर भी गिराया है
उनकी काली करतूतों के लिए।

Rarest of Rare

अमीर तो अक्सर
जुर्म करते ही रहते हैं
गुनाह ज्यादा भी हों
तो महंगा वकील रखकर
या फिर गवाह तोड़कर
अपना बचाव कर लेते हैं,
इसलिये हमने सुना दी
फांसी की सजा
जब सारे आरोप
साबित हो गये-
अपने पाप धो लिये
गरीबों की बलि देकर,
जो कम मिलता है
वही कीमती होता है जैसे
अमीर, बी-निगेटिव और हीरा,
बाकी तो सब सस्ते हैं
कत्ल के बहुत रास्ते हैं।

उड़ता पंजाब

बचपन में हम
एक खेल खेला करते थे
दो बच्चे चौकड़ी मारकर
आमने-सामने बैठ जाते थे
अपनी-अपनी तर्जनी अंगुलियां
जमीन पर गढ़ा कर,
फिर अपनी अंगुली उठाकर
जल्दी-जल्दी बोलता था
एक बच्चा:
चिड़िया उड़-कौआ उड़
और जब सामने वाला बच्चा
भैंस-हाथी को भी उड़ा देता था
उसी झटके में
तो दोनों खूब हंसते थे
उसे हारा हुआ मान लेते थे
पर अब हंसी नहीं आती:
उड़ता पंजाब सुनकर
फ्लाइंग-किस सुनकर
उड़ती बात है:
कभी कटी पतंग फिल्म बनी थी
कभी एक फ्लाइंग सिख दौड़ा था
कहीं कोई उड़नपरी होती थी
अब तो उनके बाल उड़ गये हैं
उनके हाथ में सेंसर की सरकारी कैची है
वह पर काटते हैं अभिव्यक्ति के परिंदों के
और रोज सबके चेहरे उड़ते नजर आते हैं
डरे हुए तोते गगन में उड़ते जा रहे हैं
अब उनका रंग भगवा होता जा रहा है
वे अब रामराम की जगह जयश्रीराम बोलते हैं
बीचबीच में मिठ्ठू की जगह
मोदी-मोदी उचारते हैं।

पड़ोसी

पड़ोसी के घर में कुछ गुंडे बस गये थे
वो मेरे बच्चों को परेशान करते थे
मैंने उन्हें भगाने के लिए पड़ोसी से कहा
पर उसने कुछ नहीं किया
मुझको नहीं पता कि
पड़ोसी उन्हें जानबूझकर अपने घर रखता था
या वो गुंडे वहां जबरन घुसकर बैठ गये थे
पर मैं उनसे अब तंग आ चुका था,
पड़ोसी से हमें आज भी हमदर्दी हैं
गुंडे उनके बच्चों को भी तो
अक्सर मारते-पीटते रहते है-
पड़ोसी के बच्चे जैसे हमारे बच्चे
पर हमारे भी गुंडे जैसे पड़ोसी के गुंडे,
हमें पड़ोसी नही बदलना न ही मिटना
हमारी जमीन यही है यहीं हमें रहना है-
सुखदुख में संग जीना है संग ही मरना है,
हमें मिलकर जंग लड़नी है:
मुहल्ले की हिफाजत की खातिर
गुलामी से निजात पाने की खातिर
अमन और संवाद की खातिर:
समाज में फैली गैरबराबरी से
जातपात और छुआछूत से
मजहबी और सियासती जुनून से
झूठ और बेईमानी से
कालाबाजारी और जमाखोरी से यानी
हर तरह की गंदगी और गुंडागिरी से,
पड़ोस में अमन-चैन रहे, यही अच्छा है
मेरे घर की खुशी के लिए
क्यूंकि पड़ोस तो रहेगा ही और पड़ोसी भी
जब हर घर की एक सीमा है, चारदीवारी है-
हम कोई आइजलैंड या आइसलैंड तो हैं नहीं,
पड़ोसिन से प्रेम करना ही सच्चा धर्म है!

त्यौहार की बंदिशें

खुद तो मजे कर लिये
छत पर चढ़कर खूब पतंग उड़ाई
जमकर कंचे और गिल्ली-डंडा खेले
नहर में नहाये और घूमे मेले
पर वो (पापा) हमें समझाते है :
दीवाली पर पटाखे मत चलाओ
बाजार की मिठाई मत खाओ
होली में रंग मत लगाओ
रामलीला घर पर ही देख लो
ईद पर बकरा मत खाओ
नये साल पर पार्टी में मत जाओ
तो क्या हर त्यौहार पर
हम सिर्फ झुनझुना बाजयें :
वो इतने बड़े होकर भी
कैसी बचकानी बातें करते है।
पापा दादा की बातें नहीं मानते थे
और हम पापा की बातें नहीं मानेंगे।

17 सितंम्बर: विश्वकर्मा पूजा

ढाबे वाले ने मुझे खाना खिलाया
धोबी ने मेरे कपड़े धोये
जिस रिक्शे में बैठकर बाजार जाता हूं
वो भी आदमी ही खींचता है
भगवान दुनिया बनाता होगा
पर मुझे तो हर जगह
कमरतोड़ मेहनत करने वाले लोग
दो हाथ-पैर वाले ही नजर आते हैं:
फैक्ट्री में काम करने जाती लेबर
कॉलानी की सफाई में लगे दिहाड़ी वर्कर
गोल्फकोर्स की घास काटती औरतें
सड़क की कनस्ट्रकशन में लगे लोग
एटीएम का चौकीदार
सदर बाजार में रोजी-रोटी की खातिर
जानवर की तरह ठेला खींचता हुए
दिल्ली का अप्रवासी-
बस मैं तो केवल
अपने एक दोस्त अखिलेश जी को ही जानता हूं
जो अपने नाम के आगे विश्वकर्मा लगाते हैं
और यह तो पक्का है
उनकी पूजा का तो आज दिन नहीं है।

कुदरत का कारखाना

कहते हैं
उनके अनंत हाथ थे
जिनसे उन्होंने बनाई
अजब-गजब चीजें
मसलन
देवी-देवताओं के महल
इन्द्रपुरी और यमपुरी
रथ और पुष्पक विमान
त्रिशूल और सुदर्शन चक्र
और तो और
सोने की लंका भी
सच हो या न हो
पर करते हैं पूजा जब
इतने बड़े कार्यों को
करने वाले कारीगर की
तो हम अपना काम
क्यूं बंद कर देते है
औजारों की पूजा से
जश्न मनाते हुए:
''कर्म ही पूजा'' की जगह
सिर्फ पूजा ही कर्म बन जाता है,
गुणगान करते हुए
देने वाले देवताओं के
लगे रहते हैं खुद
पैसा बटोरने में,

लुहार-कुम्हार-सुनार-बढ़ई को
उनका वंशज तो मानते हैं
पर कोई उनके काम की
सच्ची कद्र नहीं करता
इसीलिए तो सभी
अपने बच्चों को
दिमागी नौकरी में
भेजने के लिए
जुटे-पिटे रहते है,
हकीकत जानने के बावजूद
पुरानी-मनगढ़त बातों की
भावनाओं की रौ मे
हम बहे चले जाते हैं
परम्परा संस्कृति की
दुहाई देते हुए-
मन तो बहल जाता हे
पर पौराणिक ग्रंथियां
कुछ और जटिल
होती जाती हैं
हर बीतते पल के साथ।

शाकाहारी हिंसक

हाथी को किस 'कसाई' ने काटा
हाथों में रखकर हाथी का मुंह
कोन 'मुसलमान' लाया
जो गणतंत्र के ईश ने
अपने ऊपर लगाया
शाकाहारी लोग
अहिंसक हों या रहें
जरूरी तो नहीं है,
हिटलर की जीवनी पढ़कर
मुझको ऐसा लगता है
दंगों के दस्तावेज भी
कुछ ऐसा ही बयां करते है:
सभी स्लॉटरहाउस के मालिक
मुसलमान ही हों
ऐसा भी नहीं
उनमें जैन और हिन्दू भी हैं
पाबंदी लगाने से क्या होगा
गांधी के गुजरात में शराब
आज भी मिल जाती है
हरियाणा में बंद कर दो
तो दिल्ली से मिल जाती हैं
दिल्ली में बंद कर दोगे
तो बगल के यूपी में मिल जायेगी
जीभ के खाने पीने से ज्यादा अहम है
हमारे दिमाग को मिलने वाली फीड।

अंधश्रद्धा के आश्रम

क्यूं लोग मरमिटने को
तैयार हो जाते है
आस्था के नाम पर
कहीं खुद को वहां का होने के लिए
जस्टीफिकेशन तो नहीं ढूंढते
जहां एक बार जाना तो आसान है
पर वहां से वापिस आना मुश्किल है
या हिम्मत ही नहीं होती मुड़ने की
खुद बेकार फिल्म देखकर आयें
तब भी बाहर आकर
ऐसा नहीं बताते
पिक्चर हाल में अंदर जाने वालों को,
सब कुछ जानते हुये भी
हम अनजान बने रहते हैं
गुरूओं की गिरफ्त बहुत गहरी होती है
उनसे गुप्त मंत्र लेकर
मन के अंदर डर बैठ जाता है
वो हावी हो जाते हैं
उनकी लाश को भी
बरसों तक ढोते हैं
उन्हें मालिक मानकर
अंधभक्त गुलाम बन जाते हैं
बाबाओं का चक्कर
किसी चक्रव्यूह से कम नहीं है

आश्रम में न तो आश्रय मिलता है
न ही वहां कोई श्रम करता है
और खुद को भगवान कहला ही लिया तो
वहां कोई शरम भी नहीं होती
कोई सवाल उठाये तो
मुसटंडे गुरू की ढाल बन जाते हैं
सीमा के अंदर प्रवेश वर्जित है
वहां क्या होता है
यह उतना ही रहस्यमयी है
जितना यह कि गुरू कैसे बन गये वो
और इतने चेले कहां से काहे को आते है
क्यूं लोग मरमिटने को तैयार हो जाते है
आस्था के नाम पर।

अहं त्यागी

चौदह सालों से
मैंने चाय नहीं पी
नहीं की शादी
पहनता हूं खादी
स्कूल के समय से ही
सिर्फ हिंदी बोलता हूं
मीट-अंडा तो दूर
प्याज भी नहीं खाता
कोई नशा नहीं करता
सुबह प्राणायाम करता हूं
मंगलवार को व्रत रखता हूं
कई कोर्स किये हैं
जोगी बाबा जी के
खबरें देखता हूं
दूरदर्शन की,
मैं श्रेष्ठ हूं
हिटलर की तरह
जो शुद्ध शाकाहारी था।

हम पंडित हैं

पूजापाठ करते है
बड़े लोगों के घर
संस्कृत के श्लोक पढ़ते हुए
जो न हमें समझ आते है
न उन्हें समझाने की जरूरत है
बस कर्मकांड हो जाता है
आस्था के त्यौहार का
हमारे तोता-रटंत पाठ से
उनका घर शुद्ध हो जाता है
हमें मोटी दक्षिणा मिल जाती है
झुग्गी के बच्चों को पढ़ाना
वाकई बहुत मुश्किल है
जो बहुत ऊधम मचाते हैं
अटपटे सवाल पूछते हैं
रोज नहाते भी नहीं हैं
गंदे-फटे कपड़े पहनते है
वहां पढ़ाना भी फ्री पड़ेगा
इसलिये हम
अफसरों के घर ही जाते हैं
शास्त्रों का पाठ करने के लिये:
हम पक्के बनिये हैं।

रामधुन

मैं ठहरा हुआ था
रेलवे स्टेशन पर
रैस्टहाउस में
केयरटेकर की कॉपी देखी
उसमें पूरे पन्ने पर
राम राम ही लिखा था,
मैं भी जब उबासी लेता हूं
तो मुंह से राम ही निकलता है
गांव में जाता हूं तो
राम राम ही करते हैं बच्चे-बूढ़े
राम नाम से ही सच होती है मौत
दरद और शरम में भी है-हाय राम,
आम भारतीय के मानस में
गहरे बैठा हुआ है राम
इसलिए टीवी-कंप्यूटर के दौर में
रामलीला खेली जाती है आज भी
महानगरों और लघुनगरों में
राम चरित्र है-राम मर्यादा है
पर रामलला और राम मंदिर की बातों ने
मुझे रामलीला से दूर कर दिया है।
अब दशहरा देखने जाने को मन नहीं करता
जहां *जय श्री राम* के डरावने नारे तो लगते हैं
पर मन के अंदर कहीं राम नहीं बसते हैं।

रक्षा बंधन

मेरी बड़ी बहन
बचपन के सालों में
मुझे राखी बांधती थी
उसकी शादी हो गई
तो वो घर आ जाती थी
जब मैं हॉस्टल चला गया
तो आज के दिन
मैं उसके घर पहुंच जाता था
व्यस्तताएं बढ़ती गयीं
डाक से राखी आने लगी
जैसे मेरे मामा भेज देते थे
सगुन का मनीआर्डर मां को
अब फोन पर ही कह देती है-
खरीदकर खुद ही बांध लेना
चमचमाती चाइनीज राखी,
लगता है मुझको
ग्लोबलाइजेशन के दौर में
बिजनेस की यही दोस्ती
चीन से हमारी रक्षा करेगी।

जन्माष्टमी का व्रत

मैंने आज सुबह से
कुछ खास नहीं खाया
आज मेरा व्रत है
बस तीन बार चाय पी है
आलू की चाट खाई है
भावी जी दोपहर को
सेंवल के चावल की खीर बनायेंगी
कल पंडित जी बता रहे थे
खोये की मिठाई भी खा सकते हैं
सेवकेला जैसे फल तो परमिटिड हैं ही
और रोटी का ज्यादा ही मन करे तो
कुटटू के आटे की खा सकते हैं
वैसे इसकी पकौडी भी
बहुत टेस्टी बनती हैं
आज मेरा व्रत है
हमारे किशन जी का हैप्पीबर्थडे जो है-
इसलिए दूध-मक्खन और दही का तो
सब जमकर सेवन कर सकते है
मगर इस साल यह शर्त है अघोषित
सरकार की तरफ से कि :
ये प्रोडक्ट गौ मैया वाले हों
और टीवी का लगभग हर चैनल
सिनेस्टार राधिका रानी का एड
दिनरात दिखा रहा है :
बाबा कृष्णदेव के स्टोर पर
खाने के सब सामान का बढिया
जुगाड़ हो जायेगा और
आज की इस पावन संध्या में
मंकी बात में
कश्मीर को कुरूक्षेत्र मान लेने का
ऐतिहासिक बयान भी जारी हो सकता है।

ईद मुबारक

ईद मनाओ भाई ईद मनाओ
खुशियों लिए दिन यह आया
सब्र का मीठा फल है लाया
सेवईयां खाओ और खिलाओ
आओ भाई तुम ईद मनाओ
पूरा महीना तपजप कर हमने
रोजे रहकर पाक किया दिल
छोड़ पुराने शिकवे-शिकायत
आ भाई प्यारे आ गले मिल
याद करो हामिद का चिमटा
खुशी के आंसू छलकाती दादी
ईदगाह के मेले जाकर
सबको बच्चों बांटो ईदी
पहनो कपड़े आज नये जरूर
पर रखो न कोई मन में गुरूर
इबादत का बस रहे सरूर
नेक रहे हम सबकी रूह
आओ मितरों करो माफ गुनाह
सबसे कर लो तुम आज सुलह
जिसको करना है तुम्हें फतह
दिल ही है तो वो इक जगह
कौमजात से ऊपर उठकर
सच्ची ईद मनेगी तब ही
मिठाई खाये जब साथ गरीब
जो अल्लाह के ज्यादा करीबं।

चंदा मामा दूर के

मैं चढ़ा
छत पर
सकटचौथ का
चांद देखने के लिए
ताकि बता सकूँ
अपनी बूढ़ी मां को
जिसने रखा था
निर्जला व्रत
मेरे कल्याण के लिए
टीवी की खबर सुनने से
वक्त का कुछ अंदाजा था,
नजर का चश्मा पहन कर
सर घुमाते हुए चहुंतरफ
सही दिशा तलाशता रहा
मौसम के ठीक रहने ही
रब से दुआ मांगता रहा,
इंतजार करते हुए
ठंडे गोले का,
कुदरत को बेचैनी से
महसूस करने का
अलग ही तजुर्बा था
कल रात।

मेरी नजर थोड़ी कमजोर है
आसमान में चांद नहीं दिखा
पर मैनें भी कल मनाई ईद
टीवी की खबर सुनकर
चांद को तो निकलना ही था
इमाम ने मुहर भी लगा दी

कंजक पूजा

बड़ी खुशमद और मिन्नत हो रही थी-
हमारे घर भी आ जाना बिटिया
सुबह थोड़ा-सा वक्त निकालकर
आ गई वो नौ सहेलियों को लेकर
कई घरों से भोग लगाकर आई
झुग्गीबस्ती में रहने वाली बच्चियों ने
बस एक-दो पूरियां ही खाई
बाकी पैक कर लीं घर के लिए
शायद-शाम और कल के लिए
विदा हो गई थाली और पैसे लेकर,
देवियों के व्रत भी पूरे हो गए,
कल उनमें से से कोई मिल जाये सड़क पर तो
उसे रामराम का जवाब भी नहीं मिलेगा।

रोजगार

खोल लो खोका तुम
भगवान के पास में
पर रखना पड़ेगा रोज
नया और खास आइटम :
रविवार को कैंडल
सोमवार को दूध
मंगलवार को केले
गुरूवार को फूल
शुक्रवार को लड्डू
शनिवार को तेल
बुद्ध को कर लेना
वीकली ऑफ,
काम जम जाये तो
और भी बहुत कुछ
बेच सकते हो

आधा राम आधा रावण

राम की सब आदतें अच्छी थीं
रावण में सारी ही बुरी बातें थीं
क्या कभी ऐसा हो सकता है
इंसान में कोई बुराई ही ना हो
या किसी खास शख्स में
सिर्फ बुराई ही बुराई भरी हो
कागजों पर लिखा हुआ पूरा सच
कभी नहीं हुआ करता
खासकर जब उसमें
सिर्फ एकतरफा बातें होती हैं
फिर यह तो
घटित इतिहास भी नहीं हैं
न ही राम हम जैसा कोई इंसान था
न ही इसका कुछ ठोस सबूत मिला है
फिर क्यूं तुम सर फोड़ते रहते हो
पढ़-सुन-गा कर रामगाथा
जुनूनी शोभायात्रा निकालकर
क्यूं ताकत की आजमाइश और नुमाइश करते हो
राममंदिर के नारे बोलकर
दहशत क्यूं पैदा करते रहते हो
समाज के बेचैन माहौल में।

1984

(1)	(2)
वो हमारी इंडिया की	गोली चली
हमारे लिये सब कुछ थी	सन्नाटा छाया
उसको मारा था	आंधी चली
तुम्हारे जैसे	चिंगारी आई
दाढ़ी-मूंछ-पगड़ी धारियों ने ही	आग लगी
इसलिये हमारा फर्ज था	लोग जले
कुछ करना श्रद्धांजलि के लिए	जांच हुई
दंगा मैने नहीं करवाया	गवाह डरे
भीड़ आग लगाती रही	सबूत?
मैं बस चुपचाप देखता रहा	चलो भाई
तुम जरा समझा करो	करो मामला
बड़ा पेड़ गिरने से	रफा-दफा
हलचल तो होती ही है	अभी तो,
हम पार्टी के वफादार कुत्ते हैं	देखेंगे फिर
पूंछ हिलाते हैं मालिक के सामने	अगली बार
काट लेते हैं पड़ोसी को	दंगों का
और भौंकना भी हमें खूब आता है।	नया मैच !

पानी विच मीन प्यासी

संतों का जमघट
खाली है जलघट
नदियों का संगम
ठंड का मौसम
आत्मा में परमात्मा
कंकड़ में शंकर
आस्था ने कुंभ जोड़ा
कौवे का घड़ा तोड़ा
गागर में सागर
चलो भैया
नहायें अपने घर।

जाति क्यूं नहीं जाती

दलित का धर्म	इंटर कास्ट मैरिज
वो मेरे साथी अफसर के बंगले के आउटहाउस में रहता है उसके घर में पांच बच्चे है वहां उसने एक मंदिर भी सजा रखा है उस छोटे से आउटहाउस में जिसमें मूर्तियां रखी है हर मंगलवार वह व्रत रखता है शायद उसको नहीं पता है क्यूं होती है 14 अप्रैल की छुट्टी पानी पिलाने हुए वह सहमकर बोला– 'साहब जी माफ करना मैं पासवान हूं बिहार का': सेवा किया जा रहा है वह इसे अपनी किस्मत मानकर भगवान और साहब से डरकर।	शादी हुई लड़का दलित था लड़की सवर्ण थी, दोनो IAS थे बहुत खुश थे दोनों बनाकर रिश्ता समता का एक साल बाद बेटा जन्मा तो कनफ्यूजन शुरु हो गया जाति के बारे में आखिर स्कूल में बच्चे के नाना ने (जो पहले शादी के खिलाफ थे) उसकी कैटेगरी दलित लिखवाई बाप की इच्छा के खिलाफ।
कोई बड़ा फिर भी पिछड़ा कोई छोटा फिर भी ऊँचा अजीब खेल है, केंद्रीय उठापटक में छिटक रहे है लोग परिधि पर!	वो गिड़गिड़ाते हुये बोली– साहब मुझे मत छूना गंदे हो जाओगे आप मैं अछूत हूं वह बोला छाती फुलाकर– तुम शुद्ध हो जाओगी मैं बड़े मन का ब्राह्मण हूं।

कम्यूनिटी, कम्यून और कम्युनलिज्म

इंसान आता तो अकेला है जिंदगी में
पर जन्म से ही अकेला नहीं रह पाता
परिवार, परंपरा और समाज
लेबुल चिपका देते हैं उस पर
जिन्हें असली पहचान मानकर
वह उनको बचाने के लिये
लगा रहता है जिंदगी भर–
अपने जैसे लोगों को तलाशता है
किसी कम्युनिटी में शामिल हो जाता है
या फिर कोई अपना नया ग्रुप बना लेता है
पर कम्युनिटी के कॉमन डिनोमिनेटर से ही
उसका चरित्र और भविष्य भी तय हो जाता है
कोई कम्युनिटी कितनी संकीर्ण या उदार होगी
अक्सर अपने अंदर खुलापन नहीं रख पातीं :
एक जात–मजहब वालों की कम्युनिटी
एक क्षेत्र के रहने वालों की कम्युनिटी
एक भाषा बोलने वालों की कम्युनिटी
देश के मूल निवासियों की कम्युनिटी
विचार पर आधारित कम्युनिटी ही
थोड़ी बहुत मजबूत हो सकती है :
अपनी कम्युनिटी का स्वाभिमान
कब बदल जाता है अहंकार में या फिर
दूसरी कम्युनिटी के प्रति नफरत में
हमें पता नहीं चल पाता
गुंडे और ताकतवर लोग हावी हो जाते हैं
कम्युनिटी के मसीहा व रक्षक बन जाते है
और कम्युनिटी दिन–प्रतिदिन
कम्युनल होती चली जाती है।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर

यथास्थिति से
लड़ने का जज्वा है
उसमें
जोश और आक्रोश है
हिम्मत और हौंसला है,
वह जूझता है
अतीत और वर्तमान से
बेहतर कल के लिये
बदल सकता है वह
सपनों को हकीकत में
वह नया सोच सकता है
प्रचलित धारा के खिलाफ
तैर सकता है
मदमस्त सत्ता को
चुनौती दे सकता है
डट कर उसके जुल्मों का
मुकाबला कर सकता है,
समाज को-परिवर्तन की
उसी से उम्मीद है
पर सही दिशा न मिले
तो उसके भटकने की भी
उतनी ही प्रबल आशंका है,
वह युवा है :
आग और वायु का
मिलाजुला रूप।

भीड़ की बात

मन में विचारों की भीड़
अस्पताल में बीमारों की
कालेज में पढ़ने वालों की
शादी में रिश्तेदारों की
जहां भी देखें भीड़ ही भीड़
बीमार को सब बताने आते हैं
तुम बीमार हो
कालेज की कटऑफ बताती है
तुम निकम्मे और बेकार हो
दुनियादारी निभाते हैं
ऐन वक्त डिनर पर आते हैं,
फिर भी भीड़
बताती है दिशा
अकेले को भरोसा नहीं होता
वह उधर ही चल पड़ता है
रेल से उतरकर
जिधर रेला जा रहा हो
चाहे प्लेटफार्म की सीढ़ियां दोनों तरफ
बराबरी की दूरी पर हों।

Floating Population

सुबह का वक्त था
मैं हावड़ा स्टेशन पर उतरा
वहां बहुत भीड थी
लोग ईएमयू के लिये भाग रहे थे
परेशान होकर बाहर निकला
वहां ऑटो-टैक्सी की कतरों थीं
प्रीपेड और पोस्टपेड
दोनों के लिए मारामारी थी
किसी तरह गंतव्य पहुंचा
रास्ते में भी टैफिक बेहाल था
कोर्ट में काम था
वहां भी वकीलों की भीड़
काले चोंगे पहने कौवे
नोंचत-खंसोटते
अपने मुवक्किलों को,
काम को थोड़ा-बहुत आगे बढ़ाकर
शाम को हारा थका
वापिस चला तो
फेरी (नाव) में सुबह से भी
ज्यादा भीड़ थी
जहां जाओं वहां भीड़
स्कूल में-अस्पताल में
फुटपाथ पर-रोड पर
गलियों में-बाजार में
मंदिर में-मस्जिद में
नरक बन गई है धरती
कीड़े मकोड़ों की तरह
रेंग रहें हैं लोग
घिसटते-पिटते-लुटते-गिरते
बस भाग जा रहे हैं
हांफते हुए दौड़े जा रहें हैं
किधर और क्यूं
किसी को पता नहीं
कोई बेचने जा रही है
कोई बिकने जा रहा है
सब फ्लोट कर रहे हैं
काम की जगह कहीं और है
भीड़ लोगों को भेड़ बना देती है
और फिर उनमें से
कुछ भेडिये बन जाते हैं
बाकियों को डराने के लिए।

NRB: नॉन रेजीडेंट बिहारी

बिहार की गाड़ियों में अक्सर बहुत भीड़ होती है
क्यूंकि वहां के लोग रोज सफर बहुत करते है
किसी रिक्शेवाले से पूछो तो वो बिहार का है
आईएएस की तैयारी में जुटा युवा बिहार का है
ठेले पर सब्जी बेचने वाला भाई बिहार का है
प्राईवेट फैक्ट्री में दिहाड़ी पर लगी लेबर बिहार की है
स्टेनो में नई भर्ती हुई लड़की भी बिहार की है,
फसलें फैली हैं पूरे भारत में, बीज बिहार का है
मेहनती हैं लोग वहां के बहुत कुछ बिहार का है।

बस देखते रहे तो

जब आग लगाई जा रही हो
उनके घरों में
तो तुम छुप जाना अपनी कोठी में
क्यूंकि तुम वो नहीं हो
जब पिट रहा हो कोई गरीब सड़क पर
तो तुम रूकना मत
गाड़ी तेजी से भगा लेना
क्यूंकि तुम तो अमीर हो
जब मांग रहें हो ट्रेन में बच्चे पैसे
झाड़ू लगाने के बाद
तो तुम चंद सिक्कों को गिरा देना
और खुद खाते रहना पकवान
क्यूंकि तुम न कभी बच्चे थे
न ही कभी गरीब
न ही उस जाति के।

Beggar has also right to choose

जो भी मेरे सामने से निकलता है
या तो मुंह टेढ़ामेढ़ा करके निकल जाता है
बड़बड़ाते हुए
या कुछ गिरा कर आगे बढ़ा जाता हैं
केला-बिस्कुट देकर चला जाता है
वह न मेरे पास रूकता है
न मेरा हालचाल पूछता है
न मेरी जरूरत समझाता है :
क्या मुझे शुगर है
मेरा बीपी कितना है
लोग मुझे अपने छोट बच्चों से भी
छोटा और शायद गया-गुजरा मानते हैं
जिन्हें स्कूल छोड़ते हुए
उनकी पंसद के चिप्स दिला देते हैं
और पॉकेटखर्च के लिए
ऊपर से दस-बीस रूपये भी दे देते है
मुझे तो बस सबसे
झिड़के और नसीहतें ही मिलती है :
पैसे नहीं मिलेंगे, खाने को दे तो दिया
कुछ काम किया करो, हट्टेकट्टे लगते हो
हाथ टूट गया तो पैर से काम किया करो,
वही अपनी बीबी को महीने का खर्चा न दें
और कहें : पैसों का तुम क्या करोगी।

तुम्हें मिल तो जाती है रोटी
कपड़ा भी ला ही देते हैं तो
अगले दिन ही मायके चली जायेगी
पर मैं झुंझालाहट किस पर
निकाल रहा हूं
मैं तो उसका कुछ नहीं लगता
उसका ही क्यूं
किसी का कुछ नहीं लगता
सड़क पर पड़ा रहता हूं
जो मिलता है खा लेता हूं
मेरे पास कोई च्वाइस नहीं हैं
पर मेरा मन भी कभी कभार
गोलगप्पे खाने को करता है
खुद नई कमीज और चप्पल
खरीदने को करता है
भगवान का नाम लेता हूं
मांगने के लिए
पर मन से अब दुआ नहीं निकलती
उनके लिए जो
सिक्के फेंक जाते हैं मेरी कटोरी में
मैं भिखारी तो हूं पर विकारी नहीं हूं
मुझे इज्जत और प्यार भी चाहिये
रोटी और कपड़े के अलावा।

कलामुंडी खाने वाली लड़की

लोहे के छोटे से छल्ले में
कमर मोड़कर घुसती
और उससे बाहर निकलती
करतब दिखलाती
कलामुंडी खाती
उसका भाई हाथ पसारे
पैसे मांग रहा हैं
सब खेल देख रहें हैं
गाड़ियां दौड़े जा रही हैं
बत्ती हरी हो चुकी है
बच्चे खड़े होकर सिक्के गिन रहे हैं
रैडलाइट होने का इंतजार कर रहे हैं
सबकी जिंदगी यूं ही चलती जा रही हैं
इसी ट्रैफिक की माफिक।

आलू बेचने वाले बच्चे

कल मैं गया घूमने
सब्जी वाले गेट पर
वहां ढेर सारे बच्चे थे
अपने माता-पिता की
खूब मदद करते हुये
आलू बेच रहे थे
चिल्ला-चिल्लाकर
ले लो 5 के किलो-
ये बच्चे स्कूल नहीं जाते
पर हिसाब लगा लेते है
सही और उनसे जल्दी
जो पोटाटो कहते हैं
आलू को इतराकर
पर जानते है
आलू से ही बनते हैं
अंकल चिप्स
जिन्हें खाने का
सपने में भी नहीं
देख या सोच सकते
वो आलू बेचने वाले बच्चे।

बचपन बचाओ

मेरी बेटी को
स्कूल में
प्रोजेक्ट मिला
चाइल्ड लेबर पर,
वेब पर टटोलकर
एनजीओ का पता ढूंढा
मैं उनके पास पहुंचा
वहां से लिटरेचर लिया
कुछ फोटो भी बच्चों के,
ऑटो में बैठकर
अपने दफ्तर चला-
रैडलाइट पर आया
एक छोटा बच्चा
पैन लिये हाथों में, बोला-
''बाबू जी दो हैं पांच के
ले लो मैं रोटी खा लूंगा''
मैंने मना कर दिया
फिर न जाने क्या सोचकर
उसे पांच रूपये देकर बोला-
अपनी पंसद का दे दो,
उस लाल रंग के बॉलपैन से
प्रोजेक्ट की फाइल पर जब
मैने मोटे अक्षरों में लिखा-
''बाल मजदूरी सामाजिक अभिशाप है।''
तो मेरे हाथ कांप रहे थे।

सबका छोटू

छोटू उसका नाम नहीं है
छोटी उसकी उम्र नहीं है
वह ठिगना भी तो नहीं
पर उसे कहते हैं छोटू
ढाबे पर आने वाले लोग
उसके बड़े भाई को भी
छोटू ही कहते हैं
शायद खाना बनाना
उन्हें छोटा काम लगता हो
और इसलिये
ऐसा ही बरताव करते हैं
अपने घर की औरतों से भी
घरेलू काम को छोटा आंककर।

मई दिवस पर

मैं रसोई में हूं
ढाबे पर भी हूं
मैं ही सेवक
मैं ही केवट
बैंक का चौकीदार भी मैं
बंगले का पहरेदार भी मैं
दाई भी मैं ही
बाई भी मैं ही
मुझसे ही दुनिया
रिक्शा मैं चलता
बोझा भी उठाता
सब कुछ करता
गरीबी में मरता
मेरे बिना
न तो घर बन सकता है
न ही मरम्मत हो सकती है
न बाजार सज सकता है
न फैक्टरी चल सकती है
और तो और
पैदा भी नहीं होता कोई
लेबरपेन के बिना
काम तो हम वर्कर ही करते हैं
बाकी तो बस मैनेज करते है
मैं मेहनत का सबूत हूं
मन से खूब मजबूत हूं
कहो चाहे तुम मझको मजदूर
पर मत समझना मुझे मजबूर
मैं समाज की बुनियाद हूं
मशीन मेरा विकल्प नहीं है
उन्हें भी मुझको ही चलाना होता है
मैट्रो बनाने में मेरा भी योगदान है
समाज की इमारत की मैं नींव हूं।

लाल सलाम लाल सलाम,
लुहार को, कुम्हार को,
किसान को, मजदूर को
कसाई को, नाई को,
घर की बाई को बच्चे की दाई को यानी
मेहनत करने वाले हर बहन-भाई को
शत शत प्रणाम!

Bystander apathy

गूंगे वो हैं
जो चुप रहते हैं अत्याचार के मौके पर
बहरे वो है
जो नहीं सुन पाते दर्द की चीख
अंधे वो है
जो नहीं देख पाते गरीब की लाचारी
नपुसंक वो हैं
जो नहीं करते प्रतिकार गलत का
जिन्हे गुस्सा नहीं आता
जिनका खून नही खौलता
कोढ़ एक बीमारी होती है
जिसमें संवेदना मर जाती है
सुआ चुभाने पर भी दर्द नहीं होता
पढ़े-लिखे लोग भी बेवकूफ बन जाते हैं
बाबाओं के चक्कर में फंसकर
बिके और डरे हुए लोगों से कोई उम्मीद नहीं
चुके हुए लोग शायद कभी कुछ कर भी ले।

संवेदना, बेबसी और मायूसी

रात कई बार नींद खुली
गाय की आवाज सुनकर
वो रंभाती रही
बाहर निकल कर दो-तीन दफा देखा
कहीं वह झाड़ियों में फंसी तो नहीं
पर वह मुझे कहीं दिखी नहीं
वापिस आकर लेट गया
न जाने उसे क्या हुआ था:
पेट में दर्द था ?
खाना नहीं मिला था ?
उसका मालिक चला गया था?
उसका बछड़ा बिछ्ड गया था?
मुझे कुछ समझ नहीं आया?
मैं खुद को भी उस गाय जैसा निरीह
महसूस कर रहा था।

आंखों देखा हाल

जिसको भी मिला मौका
उसने ही मारा चौका
जेटली या कलमाडी
मैच खिलाने के भी पैसे
मैच दिखाने के भी पैसे
बोली लगती, प्लेयर बिकते
अमपायर भी मैनेज हो जाते
नेता या हो सटोरी
अभिनेता या खिलाड़ी
सैटिंग सभी की है तगड़ी
बैटिंग सारे जमकर करते
नहीं किसी कानून से डरते
लपकते नहीं है कैच
हार जाने को मैच
आखिरी बॉल करते फिक्स
जड़वा देते वो विनर सिक्स
दर्शक हों कितने भी बोल्ड
उनको तो मिल जाता गोल्ड

गेंद पे पड़ा बल्ला
स्टेडियम में हल्ला
होगा पक्का सिक्स
मैच तो है फिक्स
हैं लड़कियां नाचती
करती जैसे आरती
बिकते हैं खिलाड़ी
खरीदते है अनाड़ी
सबने पैसा कमाया
भई हमने तो
बस वक्त गवाया।

दफ्तर का काम

फाइलें आती रहती हैं
किसी पर छोटे किसी पर पूरे
दस्तखत कर देता हूं
पटक देता हूं जमीन पर
अपनी बांयी ओर
घंटी बजाता हूं
बीच में बॉस बुला लें
तो चला जाता हूं
कभी कोई आ जायें
तो चाय मंगा लेता हूं
कभी फोन लग लेता हूं
फेसबुक खोलकर
मन बहला लेता हूं
कुर्सी पर बैठा
सामने वाली खाली कुर्सियां
देखता रहता हूं
कोई आता हैं तो बिठा लेता हूं
किसी को कह देता हूं
बाद में आना,
शाम हो जाने पर
बंद करके कमरा
पैदल घर चला जाता हूं
रास्ते में कुछ ताजगी महसूस होती हैं
पर रात को नींद उचट जाये तो
फाइलें याद आने लगती हैं-
कल यह करना है
कल वह करना है।

File & Life

रोज एक नई फाइल खुलती है
उस पर नाम लिख जाता है
बोल्ड और ब्यूटीफुल
हैंडराइटिंग में,
कागज लगते चले जाते हैं
वह मोटी होती जाती है
उसका वजन बढ़ता जाता है
कोई उस पर कलम घिसता है
कोई कीलकांटे बनाता है
कोई उसमें कागज टांकता है
कोई उसका फीता बांधता है
कोई उसे रेंगाता है
थोड़ा-सा आगे बढ़ाता है
कोई पीछे घकेल देता है
कोई ऊपर भेज देता है
कोई नीचे फेंक देता है
कोई दबा देता है
दूसरी फाइलों के नीचे
कोई चुपचाप उसे
फिर से ऊपर रख देता है,
वह फटेहाल घूमती रहती है-
इधर से उधर
उधर से इधर
नीचे से ऊपर
ऊपर से नीचे
कई हाथों में पड़ती हैं
कई कमरों में जाती है
जमीन पर पटकियां खाती हैं
उसका रंग पीला पड़ जाता है
उसे चूहे कुतर डालते है
पर वह जिंदा रहती है
उसको दफनाना मुश्किल है
वह गड़े मुर्दे भी निकाल लेती है
और कुछ हो या न हो
फाइल में ही लाइफ गुजर जाती हैं
कभी हार-थक कर
वह बंद हो जाती है
अगर डिसाइड नहीं हुई
तो क्या हुआ
डिस्पोज तो हर फाइल
हो ही जाती है
वैसे कभी गायब भी हो जाती है
या कर दी जाती है।

Paper-more

जीरोक्स और प्रिंट सस्ते हो गये हैं
साहब घंटी बजाकर कहते हैं :
फटाफट चार कॉपी कर लाओ
और सब डिप्टियों को दे दो,
बटन के क्लिक पर ईमेल में
कई अटैचमेंट लग जाते है-
एक ही लैटर की
कई सारी कॉपी आ जाती हैं
ऊपर से नीचे घुग्गियां लगती रहती हैं
सारी डीलर के पास जाकर ही रूकती हैं
उस बेचारे को तो
सभी लगानी पड़ती हैं फाइल में
न जाने किस अफसर को
कब सनक चढ़ जाये
मेरी मार्क कॉपी ही दिखाओ
फैक्स और ईमेल लगीं हों
तो भी पोस्टल कॉपी तो चाहिए ही
वह नोटिंग साइड में
सीरियल नम्बरों का रेफरेंस उतारता है
करोसपोंडेंस साइड में लगे कागजातो के
वही तीस-चालीस शब्दों वाली
लिमिटेड वाकेबुलरी
वो भी अक्सर
पुरानी फाइलों से ही चुराई हुई
'ए बी सी' का घेरा लगाकर
अफसर एप्रूव कर देते हैं
फाइल डिस्पोज हो जाती है
और फाइलिंग करते हुए जब
समझ में नहीं आता कि
उस कागज को किस फाइल में रखें
तो मिसलेनियस फाइल में रख देते हैं,
पेपरलेस के नाम पर
फाइल बेढंगी और मोटी होती जाती है
टैग टूटने लगते है
कागज फटने लगते हैं
उसे संभालना ही एक काम हो जाता है
और दस रूपये में कोई भी खुराफाती
फाइल से कुछ भी मांग सकता हैं
सरकार की नाम में दम कर सकता है
पता नहीं क्या सुधार हो रहा है
फीता लंबा होता जा रहा है और
रद्दी है कि निपटने का नाम ही नहीं लेती।

कामकाज की सालाना रिपोर्ट

कल शाम मेरे पर आ गई
पच्चीस स्टॉफ की सीआर
जिन्हें वापस देना था
आज सुबह तक ही
जैसे-तैसे भर कर,
वही गिने-चुने और घिसे-पिटे
अंग्रेजी के कुछ शब्द जैसे
सिंसियर, हाईवकिंग, रिलायेबल :
लिख कर ही
निपटाना होता हैं
यह काम भी
गुड का मतलब भी
अच्छा नहीं होता
एक ही काम के लिए
सब अपनी फरफोरमेंस भरते हैं
खुद को उसका क्रेडिट देते हुए
हम न होते तो काम कैसे होता :
चपरासी भी यही भरेगा
यदि उसको मौका मिले
सेल्फ-अप्रेजल का
मैंने चाय पिलाई
उनके घर के काम किये
तभी साहब काम कर पाये,
एक से लगने वाले कई कॉलम
जैसे कोई साइकोलॉजिकल टैस्ट हो
दस पैरामीटर्स में से सात गुड हों
तो भी अंत में वैरी गुड कर देते हैं,
उस वक्त कर्मचारी की
जैसी शक्ल सामने आ जाती है
वैसी ही ऑवरऑल रेटिंग भर देते हैं
आरटीआई के बाद
सिर्फ इतना ही फर्क आया है-
सीआर अब कांफिडेंशियल नहीं रही
उसका नाम बदलकर
अप्रेजल रिपोर्ट हो गया है
फाइनल हो जाने बाद
उसे कर्मचारी को दिखाना भी पड़ता है
इसलिए अब कुछ नहीं बिगाड़ सकते
खुराफातियों का,
कलम का सारा जोर बस
सीधे-साधे पर ही चलता है
उनकी ही सीआर
हम खराब कर पाते हैं।

हर जगह खास होती है

मैं और मेरे बॉस
जब साथ बैठते हैं
तो अक्सर कपूरथला की
बातें करने लगते है
वहां काम ऐसे होता था
कम्प्यूटर थे-बढ़िया सिस्टम था
मेहनती लोग थे
जिनमें गजब की एनर्जी थी
कुछ करने का जज्बा भी था
खाने को भी वहां अच्छे ढाबे थे
आलू के वो बड़े परांठे मिलते थे
पर असलियत तो यह है कि
जो मसाले हैं घर में
उन्हीं से तरकारी बनानी पड़ेगी
जैसे भी लोग हैं दफ्तर में
उन्हीं से तो काम करवाना पड़ेगा
कोसने से बात नहीं बनेगी
न याद करके कपूरथला को
दिल को मसोसना होगा,
न गोरखपुर दिल्ली बन सकता है
न ही दिल्ली सिंगापुर बन सकता है
बस थोड़ा बहुत ही हिला सकते हैं
सिस्टम को
जो दरअसल कुत्तें की पूंछ जैसा है
कुछ वक्त बीत जाने के बाद
वापिस मुडकर वहीं आ जाता है।

ख्वाहिश

मेरे पिता जी ने
सारी जिंदगी गुजार दी
सरकारी नौकरी करते हुए
किराये के मकान में
पर मेरी भावी ने
शादी के बाद
पहले साल ही
अपना घर बनवाने के लिए
घर में आफत मचा दी,
भैया ने लोन लिया
छोटा सा मकान बनवाया
अब एचआरए लेते हैं
उससे लोन की
मासिक किश्त चुक जाती है
पर भावी अभी भी नाखुश हैं
उन्हें नई कालॉनी में
अपनी सहेली की तरह
एक बड़ा अर्पाटमेंट चाहिए।

बारह छुटकियां

Color काला धन गोरा तन हरा मन नीला धन।	Corruption न आचार न लाचार दो का चार बस भ्रष्टाचार
Reservation तत्काल में सीट पाओ या कोटा लगवाओ जनरल में है भीड़ तुभ भाड़ में जाओ	RTI आरटीआई लगाई जवाब तो नहीं मिला पर अपना काम हो गया हम चुप हो गये।
Sub-letting टाइप – 3 वाला घर सबलैट कर दिया खुद टाइप – 1 में रहता हैं किराया देकर नौकरी में बिजनेस करता है	Suvidha-Centre पहले बहुत मुश्किल थी अब सुविधा – केंद्र खुल गया है सिंगल विंडो पर पूरी फीस दो लाइसेंस घर पहुंच जाता है बाबूओं को खुद बंट जाता है।
Compensation बेटी का एडमिशन कराया एमबीबीएस में हॉस्टल चली गई बेटे की शादी कर दी बहू भी आ गयी पैसा भी आ गया।	Sting Operation उसने दो सौ मांगे मैं सौ तक राजी था मैंने बारगेन किया जब बात न बनी तो रिकॉडिंग बनाकर भेज दी मीडिया मे मैं छा गया।
Attendance साहब ने रजिस्टर मंगाया सहकर्मी ने मोबाइल मिलाया वो प्रकट हो गये हाजिरी लग गई वो गायब हो गये।	Photo किसी थी एंगल से खींच लो कुछ भी छुपा लो कुछ भी दिखा दो शहर में भी जंगल नजर आता है जंगल में भी मंगल नजर आता है।

Bio-Metrics अंगूठा लगाओ आंखे दिखाओ काम चाहे मत करो वक्त पर आ जाओ फिर चंपत हो जाओ मशीन के सामने सुबह शाम बस तुम खड़े हो जाओ।	E-Auction/ Tender जाकर सायबर कैफे सब एक साथ बैठे दाम बराबर नीलामी और खरीद ऑनलाइन रसीद सिस्टम ही ऐसा रहे जैसा का तैसा।

खुद को ही सुधरना होगा

टीवी पर सिटंग आपरेशन देखकर
पहुंचा सुबह अगली मैं
रेलवे आरक्षण केंद्र
तो सब बदला पाया
मुसाफिर कम थे, पुलिस ज्यादा
मीडिया पावरफुल है
पर उसका असर शमशानी वैराग्य जैसा है
दफ्तर में हाजिरी का रजिस्टर देखना शुरू कर दो
तो कुछ दिन तो लोग वक्त पर आने लगते है
पर जरा सी ढील दी नहीं कि
वही ढर्रा फिर शुरू हो जाता है,
टैक्नोलोजी भी कुछ हद तक ही हल है
उसमें भी सेंध लगा लेते हैं खुराफाती लोग
क्राइसिस मैनजमेंट का हाल ही ऐसा है
उधर आग बुझाने में जुट गये सब
और इधर गांव में बाढ़ आ गई,
सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगती
कुत्ते की पूंछ भी सीधी नहीं होगी
फिर भी बहुत जरूरी है
अड़ियल घोड़े की लगाम को कसना
मदमस्त हाथी पर अंकुश बनाये रखना,
जब पूरे घर में ही गंदगी फैली हो
तो कोनों को साफ करने से
बात नहीं बनती
न ही एक दिन बुहारना काफी है
सबको भंगी बनना होगा
अपनी-अपनी झाड़ू लेकर।

अड़तालीस चौपाईयां

1	आये नहीं कही उसे खरोंच इतना ही बस मन में सोच	2	करता सिर्फ उतना ही काम ताकि न बिगड़े उसका नाम
3	घुमा-फिरा के फाइल पे लिखता बाहर वैसा वह नहीं दिखता	4	खींच-खांच कर बाल की खाल इंगलिश से वह करे कमाल
5	सांप भी मरता टूटे न लाठी सरकारी दफ्तर सफेद हाथी	6	खुश रखता ऊपर वालों को दु:ख देता नीचे वालों को
7	मन्तर उससे ले लो भाई उसने तो यही ट्रेनिंग पाई	8	कीमत करते रहो वसूल भाड़ मे जायें सारे असूल
9	मालिश करो तरक्की पाओ सेवा करो और मेवा खाओ	10	सौ की चोरी में पकड़े जाओ तो दो सौ देकर बाहर आओ
11	है बस उसे एक कठिनाई नींद कभी न ठीक से आई	12	सपना भी विजिलेंस का भाता खुलकर कभी हंस नहीं पाता
13	कपड़ा कितना भी तुम ले आओ अपनी फिटिंग का सूट सिलाओ	14	फीस उन्हें बसे देते जाओ टेलर-मेड टैक्स बनवाओ
15	जोड़-तोड़ की जिनकी आर्ट वो कहलाते खुद को स्मार्ट	16	असली जैसी लगती फर्जी सेवा का मौका दो सरजी
17	जैसी भी कोई करता अर्जी वैसा सूट बना देता दर्जी	18	चाहे नियम बना लो कैसा कर पाता वो अपनी मर्जी
19	रखते हैं सब उसे वकील वो देता है अजब दलील	20	कागज रखते पूरे पक्के मन के नहीं चाहे सच्चे
21	कपड़े पहने वो सदा सफेद कोई न समझा उसका भेद	22	सूरत बाहर सीरत अंदर तिलक लगाकर जाता मंदिर

23	सिस्टम में कितने भी खराब पर उंगली का अजब हिसाब	24	एक करी जो किसी की ओर तीन मुडेंगी अपनी ओर
25	मंजिल ठीक और सही रास्ता नहीं किसी से कोई वास्ता	26	न तो डराओ न ही डरो न्यूट्रल होकर काम करो
27	सच के संग सदा रहें हम चाहे खुशी हो चाहे गम	28	हो कितना भी चाहे दवाब अंतरात्मा देगी सही जवाब
29	अदला-बदली मौसम जैसी इससे घबराहट फिर कैसी	30	दूर रहो दौलत से यारी झगड़े की यह जड़ है प्यारो
31	रिश्वत लेना तो है ही गलत रिश्वत देना उससे भी गलत	32	कुर्सी से मत चिपको तुम माया-मोह को छिटको तुम
33	बटुआ गिरा सड़क पे जाओ उसको देख मत ललचाओ	34	सीधे चलो तुम सीधी राह दुनिया से होकर बेपरवाह
35	लड़ते रहो सच की खातिर जीत उसी की होगी आखिर	36	सबका अपना-अपना रोल चाहे बांसुरी हो चाहे ढोल
37	सबको मानो अपना साथी चाहे चींटी या फिर हाथी	38	तोलें-नापें ठीक से हम न तो ज्यादा न ही कम
39	लाला लालू बाबा बाबू अब तो सारे हैं बेकाबू	40	अंकुश इन पर रखना होगा वरना जाने क्या-क्या होगा
41	पूछो हर जगह सवाल चाहे मचे उससे बवाल	42	पैसा आता कहां, वहां से पैसा जाता कहां, वहां से
43	बेटी के लिए क्यूं दिया दहेज बेटे के लिए क्यूं लिया दहेज	44	जिसने गिरवी रखा जमीर क्यूं तुम कहते उसे अमीर

45	करो वही जो कहते हो कहो वही जो करते हो	46	सेवक हैं हम सरकारी हम पर भारी जिम्मेवारी
47	चढ़ा हुआ है समाज का कर्ज उतारना उसे है अपना फर्ज	48	जागें हम भी और जगाएं आओ आशा के दीप जलाएं

स्मृतिपटल (Incumbency-Board)

ऑफिस के चैम्बर में
लकड़ी का एक बोर्ड टंगा है
जिस पर कभी ध्यान नहीं जाता
आज गौर से देखा
कुछ नाम लिखे हैं :
एक दिल्ली चला गया
दूजा रेलवे छोड़ गया :
तीसरा जिदंगी ही छोड़ के चला गया
मैं भी चला जाऊंगा
पल दो पल का किस्सा है
जो आज यहां का हिस्सा है
'कब तक' वाला
कॉलम भर जायेगा
एक लाइन और पूरी हो जायेगी
कोई और आकर बैठ जायेगा
इस बोर्ड को पढ़ने के लिए
इस पोस्ट को भरने के लिए
बस कुर्सी-मेज थोड़ा घुमा लेगा
कमरा कुछ सजा लेगा
अपनी पसंद के मुताबिक या
वास्तुशास्त्र के अनुसार:
सरकार यूं ही चलती रहेगी
रेलगाड़ी दौड़ती रहेगी
लोग आते-जाते रहेंगे
गीत गुनगुनाते रहेंगे
''मैं पल-दो-पल का शायर हूं।''

ई-नाम का चक्कर

नाम वालों को ही
अक्सर ईनाम मिलता है
लौटाने पर उनका नाम
और बड़ा हो जाता है
मुझे तो लिखकर और बोलकर ही
अपना विरोध जताना होगा
सरकार के कानों पर जूं रेंगे या न रेंगे
पर चुप्पी से खुराफातियों को शै ही मिलती है
इसलिए बिगड़े माहौल को बदलने के लिए
हस सभी को को कुछ करना चाहिए
संभलना और संभालना चाहिए।

करते सब काम
खास का नाम
बाकी तो आम
नदारद ईमान
बटते हैं ईनाम
जपते रहते है वो
मैगसेसे की माला
सुबह और शाम
हलाल या हराम
नंगाई का हमाम
मैडल-शील्ड पाओ
सस्ते हैं दाम
अजब तामझाम
यूं ही बीत गई
जिंदगी तमाम।

मशीन देवी की आरती

ऊं जय मशीन माता ऊं जय मशीन माता
तुमरे सिवा कोई हमको नहीं भाता
तुमसे ही जग चलता तुम ही हो करता
सब कुछ तुमसे होता जीता या मरता
कपड़े तुम ही धोती तुम ही सुखलाती
इसतरी से तुम उनकी तह भी बना देती
वक्त जो बचता देखके टीवी कट जाता
गरमी-सरदी में तुमसे सुविधा मैं पाता
तुमरी किरपा से बासी नाश्ता पच जाता
स्कूटी से मैं जल्दी ऑफिस पहुंच जाता
मोबाइल पर तुम सबको चिपकाये रखतीं
और किसी से कोई न रिश्ता निभा पाता
कम्प्यूटर से ही बच्चे प्रोजक्ट बना पाते
कैलकुलेटर पर सब संख्या जोड़ पाते
बुलडोजर जब दिखता मन मेरा डर जाता
ताड़का-सी तुम लगती जब क्रेन कोई लाता
रोबोट की बातें सुनकर मजदूर चकराता
पावरलूम पे साड़ी बनती, बुनकर घबराता
आरती करने में भी पुजारी आराम पाता
वो सोता रहता रिकार्ड खुद ही बज जाता
भक्तों की बस इतनी विनती स्वीकार करो
मशीन देवी बस हम पर इतना उपकार करो
पंगु हमें मत बनाओ मैया कुछ तो ध्यान धरो
मालकिन बनकर दास को नीचा न तुम करो।

Against Civilization

(जॉन जेर्जन के मुलाकात के बाद)
बहुत पहले
आदमी कुदरत के साथ रहता था
अपना भोजन खुद इकट्ठा करता था
शिकार करता था, पेडों पर चढ़ता था
इतिहास की किताबों में पढ़ाया जाता है
जंगली जानवरों को पालतू बनाना
सभ्यता के विकास का अहम बिंदु था
पर कुछ उल्टा ही लगता है
पहले इंसान ने पालतू बनाया जानवरों को
जैसे घोड़े-गाय-कुत्ता-बकरी
उनके गले में रस्सीघंटी बांधी, नकेल कसी
उनको हांका दौड़ाया-चाबुक चलाया
फिर उसने इस्तेमाल किया
वर्चस्व बनाने का यही औजार
अपने जैसे ही हाड़मांस वाली औरतों पर
पसली से पैदा हुई बताकर और
उन्हें कमजोर मानकर,
फिर अपने जैसे ही आदमी पर
जाति, नस्ल और वर्ण का हवाला देकर
फिर खरीदने-बेचने लगा लोगों को पैसे से
गुलाम बनाया-नौकर बनाया
दाम लगाया-दास बनाया
मजदूर बनाया-मजबूर बनाया।
उनका इस्तेमाल किया जब तक मन किया
फिर नौकरी से बाहर निकाल फेंक दिया
इंसान भी जानवर की तरह निरीह हो गये
हाथ जोड़ खड़े हो गये
घुटनों के बल चलने लगे
जब से जंजीर पहनाने की तरकीब मालूम हुई
तभी से सभ्यता का पतन शुरू हो गया
बैंक, करेंसी, विरासत और बपौती ने
उसे रसातल में पहुंचा दिया।

गुस्से की डिक्शनरी

सब कहते हैं
गुस्सा नहीं आना चाहिये
इससे सेहत खराब होती है
पर क्या करें आ जाता है
थोड़ी देर बाद शांत भी हो जाता है
दूध के ऊफान की तरह
किसी को बहुत जल्दी आ जाता है
किसी को काफी देर बाद आता है
जैसे अलग अलग होता है
हर लिक्विड का बॉयलिंग प्वांइट
और मैल्टिंग प्वांइट भी,
गुस्से की डिक्शनरी
अक्सर बहुत छोटी होती है
बाद में समझाना पड़ता हैं
हमारा यह मतलब नहीं था,
दूसरे को या सिचुएशन को ही
हम जिम्मेदार ठहराते हैं
हसलिए गुस्से से
दूर नहीं हो पाते है
मुझे लगता है
गुस्सा आना भी चाहिए
जब जरूरी हो
जहां जरूरी हो
जिस पर जरूरी हो
जितना जरूरी हो:
जुल्म और जबदस्ती के खिलाफ
शोषण और विषमता के खिलाफ
झूठ और धोखे के खिलाफ:
पर पता नहीं चलता उस वक्त
इतना गुस्सा जरूरी था?
छोटी छोटी बातों पर आ जाता है
कभी गुस्से को पी जाते हैं अंदर ही
बाहर सभ्य दिखने के लिए
पर दबाने से गुस्सा
खत्म नहीं हो जाता
अलबत्ता सेहत अंदर से
खराब हो जाती है
गुस्सा लिख और बोलकर ही
निकलता है
इसलिए इसे जाहिर करने की
हमें डिक्शनरी बढ़ानी चाहिये।

ठेके पर सरकार

एक नया हल निकाला है
जनता की चुनी हुई सरकार ने
जहां भी खुद काम न कर पाओ तो
उस काम को ठेके पर दे दो
स्कूल - अस्पताल
रेल - तेल - पीएसयू - जेएनयू
मॉल खोलो, टॉल वसूलो
सब ठीक हो जायेगा
ठेकेदार मुनाफा कमायेगा
मजदूरों को खूब ठोकेगा
न तो ठीक से दिहाड़ी देगा
न ही संडे की छुट्टी देगा
पर देखते जाओ
वो सब काम कर देगा
सब ठीक हो जायेगा,
ठेका खुला है
शराब और भांग का ही नहीं
पब्लिक मनी का भी -
लूटमलूट मची है
आओ ठेकेदारों आओ!
लच्छेदार प्रोजेक्ट सुझाओ
बड़ी रकम के प्रस्ताव बनाओ
हमें नये एरिया बताओ
जहां लोकहित के नाम पर
ठेके दिये जा सकते हैं
जमकर लूटो मजे करो
हमें भी ऐश कराओ,
आवेदन आमंत्रित है
सबको खुला न्यौता है
अब ठेके पर देश चलेगा
देश मुक्तबाजार बनेगा।

डेवलपिंग सिटी

जब लोगों को कहते सुनता हूं
किसी शहर के बारे में कि
वह बहुत विकसित और बढ़िया है
तो मैं कुछ सोचने लगता हूं
कितनी जगह ऐसी हैं
जो मेरे लिए नहीं बनी हैं :
कहीं एंट्री फीस बहुत ज्यादा है
होटलों में ड्रेस कोड लागू है
झोला टांगकर नहीं जा सकते
जूते-कपड़ों के महंगे और मैगा शोरूम
जिनकी चकाचौंध से ही डर लगता है
बाहर ही ठहर जाते हैं सहमकर,
पब्लिक स्कूल जो प्राइवेट दुकान हैं
हॉस्पीटल-जहां एडमिट नहीं हो सकते
मोटी रकम बिना, चाहे मौत के दरवाजे पर हों
और तो और कहीं कहीं तो (जैसे गुड़ के गांव में)
बिना गाड़ी-टैक्सी के
अर्पाटमेंट भी नहीं पहुच सकते
फिर कितने भी स्मार्ट शहर बन जायें
मेरे लिए तो स्पेस कम ही होता जा रहा है
गांव वापस नहीं जा सकता
और शहर में रह नहीं सकता
बस सपने देख कर मैं जिंदा हूं
हकीकत में तो रोज ही मरता हूं।

भूदान से भूमिछीन की ओर

पुराने जमाने में
मेरे सरकार थे
जमीनदार
जिन्होंने मुझे गुलाम बनाया
फिर भूदान में ऊपर जमीन देकर
सरकार ने भी मेरा मजाक उड़ाया
अब मेरी जमीन को छीनकर
कारपोरेट वाले लोगों को
जमीन देने में लगी है
यह भी सरकार ही है
मेरा क्या है
न जल न जंगल न जमीन,
व्यापारी, नेता और अमीन
सारे मिल गए हैं कमीन !

हमारी जमीन पर तरक्की तुम्हारी

जब घोषणा हुई
हमारे गांव के बगल में
पावर-प्लांट बनने की
तो हम लोग खुश हुए
नौकरी मिलेगी
व्यापार बढ़ेगा
हमारे बच्चों को कान्वैंट स्कूल के लिए
शहर नहीं जाना पड़ेगा
बिजली भी शायद फ्री और ज्यादा मिलने लगे
पर हमारे दादा उदास थे-
खेती की जमीन चली जायेगी
हम मालिक से नौकर बन जायेंगे
हुआ भी कुछ ऐसा ही
मैं पानी पिलाता हूं साहब को
मेरी बीबी झाड़ू-पोंछा करती है
मैमसाहब के नखरे उठाती है
पापा दूध बेचने जाते हैं कालॉनी में ,
बन गए हम मजदूर
नौकरी करने को मजबूर
बिजली पहले भी नहीं आती थी
बिजली आज भी नहीं आती है
पर पड़ोस में
विद्युतनगर की
रोज रात की दिवाली
उदास कर देती है मुझे
लालटेन की रोशनी में
पढ़ने के जख्म पर
नमक छिड़कते हुए ,
हमारा तो बस सवेरा
रात को दीपक तले अंधेरा।

अर्थशास्त्र की संवेदनहीनता

क्यूं शेयर के भाव गिरते-उतरते है
क्यूं प्याज अचानक महंगा हो जाता है
प्रोपर्टी के दाम रातों-रात कैसे बढ़ जाते है
क्यूं मोदी जी जी कभी रूआंसे हो जाते है
अर्थशास्त्र के नियम समझ नहीं आते
बाजार सिर्फ सेंटीमेंट से नही चलता है
और इसको चलाने वालों के पास
दिल नहीं दिमाग होता है
उनकी कोई सच्ची संवेदना नहीं होती
बस उनका मकसद तो
ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना होता है
वो भी किसी कीमत पर
येन-केन-प्रकारेण
चाहे दाम बढ़ाकर या क्वालिटी घटाकर
नई पैकिंग में कम डालकर
या ब्रांड का नाम बदलकर
पुराने नोट हटवाकर
या नये नोट चलवाकर
और हम-तुम आंकड़ो में
बेवजह फंसे रहते हैं
ग्राफ की आड़ीतिरछी लाइनें देखकर
और प्रतिशत के नम्बर निकालकर
खुश होते रहते हैं
जैसे कचड़े के ढेर में से बच्चे
कोई खिलौना ढूंढ रहे हों,
स्टॉक मार्केट के सेनसैक्स से
ज्यादा अहम है
हमारी संवेदना का सूचकांक !

गरीबी रेखा

अखबारों की चर्चा पढ़कर
मैं भी निकल पड़ा
बाजार की सैर करने
जेब में डालकर सिक्के :
पांच के पांच
दो के दो
एक का एक
यानी कुल तीस रूपये
क्यूंकि रोजगारी की किल्लत है
टॉफी पकड़ा देते हैं दुकानदार
खुले सिक्को की जगह,
तलाशता रहा भरी दोपहर
'ईदगाह' के हामिद की तरह
कुछ तो मिल जाये
जिससे पेट भर जाये
दुबारा भूख न लगे
चाय-समौसा-भुटटा
केला-बिसकुट
अचानक एक आइडिया आया
मैं गुरूद्वारे पहुंच गया
जमकर लंगर खाया
पांच का सिक्का चढ़ा दिया
याद करते हुए
नेता जी की बात कि
पेट भर खाना मिल जाता है
पांच रूपये में,
हिसाब लगाने पर पता चला
मैं सौ गरीबों के बराबर हूं
तीस की रेखा के हिसाब से।

नया नोट

हम तो पहले से ही परेशान थे
1000 का नोट लेकर
उसे जल्दी खुलाने के चक्कर में रहते थे
काला गोरा तो वो नहीं जानता
पर कल एक छोटे बच्चे ने बताया
2000 का नया नोट
पर्पल कलर का है-
न जामुन खरीद सकते
न ही बैंगन
बस ज्यादा धन
अब कम जगह में रख सकते हैं
उससे मंगल ग्रह की सैर का
ख्वाबी मजा ले सकते है।

धन्नो रानी जी
गुलाबी रंग की साड़ी पहने या
फिर काली सलवार
रहेंगी धन्ना सेठ के पास ही !

काला कोट टाई सफेद

सुनो, अमीर व लुटेरे लोगों
तुमने बहुत मेहनत की है
पैसा संभालने में
पैसे से पैसा बनाने में, इतनी कि
भरी जवानी में ही
तुम्हारे बाल सफेद हो गये
और धन काला
अपनी सेहत के लिए सुनो :
वह रामदेवी तेल है
सफेद बाल काले कर लो
यह सरकारी तेल है
काला माल सफेद कर लो,
राजीव गांधी कहते थे :
पिचासी सिस्टम में ही अटक
जाता है
गरीब तक सिर्फ पंद्रह ही पहुंच
पाता है :
हम पच्चीस तो तुमको जरूर
वापिस देंगे
पचास तक भी दे सकते हैं
यह हमारे इंसपेक्टर की मर्जी
पर है
बाकी हम गरीब-गांव के विकास की
योजानाओं के लिए
आउटसोर्सिंग ही करेंगे तो
आपको ठेका भी मिल सकता है
जैसे ईराक और अफनागिस्तान के
पुर्ननिर्माण में
अमरीका से मिला था
दोस्त कंपनियों को
निवेश के लिए पब्लिक बैंकों से
तुम्हें लोन भी दिलवा देंगे।

अरे, हम तुम्हारे ही हैं
बस आम लोगों को मत बताना
चुपचाप तुम्हारे कर्जे भी तो
हमने माफ किये ही हैं
तुम्हें सस्ती जमीन भी तो दिलवाई है
भूमि-अधिग्रहण कानून बनाकर
हम कोई अहसानफरामोश थोड़े ही है
आगे भी तो चुनाव लडने हैं
तुम्हारे ही भरोसे
वो तो जनता को गुमराह करने के लिए
हमें नोटबंदी जैसा कुछ करना पड़ा
जुमलेबाजी करनी ही पड़ती है
हम लच्छेदारी और लफ्फाजी वाले
भाषण देते हैं
मन की असली बात को छुपाने के लिए,
लांगटर्म में सब आपके के लिए ही है
सरजी!
काली भैंस रखो या सफेद गाय
दूध तुम्हारा ही बिकेगा
चारा खिलाओ किसी भी रंग का
और पानी मिलाओ जितना भी
दूध तो सफेद ही रहेगा,
सब्जी में तो सफेद नमक ही डालते है
पर रामदेव जी कहते है
हाजमे के लिए
काला नमक अच्छा होता है
इसलिए खूब सफेद खाए जाओ
और काले से पचाए जाओ !

सरकारी दामाद

आओ साथियों, जरा सोचें :
हम कितना लेते हैं समाज से
उसे कितना और क्या-कुछ देते हैं
हम कितने कन्ज्यूमर हैं
और कितने प्रोड्यूसर है
अनाज हम नहीं उगाते
कपड़ा हम नहीं बुनते
मकान हम नहीं बनाते
सब्जी हम नहीं बेचते
बिजली हम नहीं बनाते
मशीन भी हम नहीं चलाते
और तो और
सफाई भी हम नहीं करते
हम बस मैनेजर और सुपरवाइजर हैं
वर्कर-लेबर से सिर्फ काम करवाते हैं
उन्हें गुजारे लायक कुछ दे देते है
खुद गुणा-भाग और जमाघटा कर
फाइलों पर कुछ अंग्रेजी लिख देते है
महीने में मोटी सैलरी पा जाते हैं
उसी से सब कुछ खरीद लेते हैं
हम तो बस सरकारी दामाद हैं
सास हमारा पूरा ख्याल रखती है
हम PURE और पूरे पैरासाइट हैं।

मिडिलमैन

क्यूं नहीं देता पक्की रसीद बाजार में कोई
क्यूं प्रोपर्टी के रेट बढ़ते जाते है इतनी तेजी से
क्यूं बदल जाते हैं ट्रांसफर आर्डर कुछ दिन में ही
क्यूं मुश्किल है बीमार की भर्ती एम्स में
जान-पहचान और सिफारिश बिना,
क्यूं प्याज इतना मंहगी हो जाती है अचानक
क्यूं लागत मूल्य नहीं लिखा जा सकता
एमआरपी के साथ
बिचौलियों का दबदबा है-
एजेंट से ही बीमा कराना पड़ता है
आधार और पासपोर्ट के लिए भी
किसी को पकड़ना पड़ता है
तत्काल में ही कन्फर्म टिकट मिलता है
आरटीआई में सवाल पूछते ही काम हो जाता है
कोर्ट में सच की पैरवी के लिए भी
वकील जरूरी हो जाता है
ब्रोकर ही शेयर मार्केट चलाता है
दिल्ली हाट में मधुबनी की पेंटिंग
दस गुने दाम में बिकती है :
कमीशन और डीलर के चक्रव्यूह में फंसे
कॉमन मैन के लिए
यह दलालों का दौर है !

बाजार की तराजू

विदेश यात्रा से लौटने पर
जो सरकारी डॉलर बचे
उनको भुनाने के लिये
मेरे दोस्त रोज देखते थे-
अखबार और इंटरनेट
सब बहुत खुश होते थे
जब रूपया गिरता था,
यह सब तो सापेक्षता है
सटटे बाजी के बाजार में
शेयर के चढ़ते भाव उतरते है
सेंटीमेंट और स्पेकुलेशन से
जमीन एवं शेयरों के दाम
बेहिसाब बढ़ते घटते है
पॉलिसी और ग्रोथ से इनका
क्या होता है लेना-देना
किसी को पता नहीं चलता
दवाब बनाने के लिये
बस बनते रहते है
टेढ़े-मेढ़े ग्राफ ।

महंगाई

1	2
तब मंगल बाजार में जाने पर बड़ा मजा आता था हर माल पांच रूपये सब कुछ खरीद लेने को मन करता था अब रोज जाता हूं बाजार मन को पक्का करके, हर सब्जी पचास रूपये किलो क्या खाऊं क्या खरीदूं? इसी सोच में घूमता रहता हूं दुकान-दर-दुकान और कभी-कभार तो कंधे पर खाली झोला लटकाए ही वापिस चला आता हूं घर चप्पलें घसीटते हुए।	महंगाई बहुत है पैसों में कुछ नहीं मिलता है फिर क्यूं टटोलते हैं हाथ जेबों में खुले सिक्के गुरूद्वारे में मत्था टेकते वक्त और रेलवे स्टेशन पर किसी भिखारी के सामने से गुजरते हुए।

खर्चा और तरक्की

किस विभाग ने कितना फंड खर्च किया
इससे विकास नहीं आंका जा सकता
पिता जी को नेटबैकिंग से पैसा भेज दिया
इससे ही उनकी नहीं हो जाती प्यार-परवाह
शराब की बिक्री से सरकार को रिवेन्यू मिलती है
इसलिए इसको जायज नहीं माना जा सकता
सिगरेट-तम्बाकू के पैकेट पर चेतावनी लिखकर
बिजनेस अपनी जिम्मेदारी से बरी नहीं हो जाता
लेबर को ओवरटाइम दे दिया
इससे फैक्टरी मालिक मानवीय नहीं हो जाता
मंहगे कालेज से बेटे को डॉक्टरी कराई है
इससे उसे मरीज को लूटने का लाइसेंस नहीं मिल जाता।

रेडीमेड

जब पूछा मां ने
लंबे सफर पर जाते हुए-
''रास्ते के लिए बांध देती हूं
दस परांठे और आलू की सब्जी''-
मैंने कह तो दिया-
रहने दो अब सब कुछ
रेडीमेड मिल जाता है-
पर मैंने सोचा
सच तो है यही है :
कोई तो बनाता ही होगा रोटी
कोई तो सिलता ही है कपड़े
कहीं तो कूटे जाते हैं मसाले
कोई तो कंकड़ बीनता है चावलों से
कोई तो पापड़ बेलता-अचार डालता है
ताकि हमको मेहनत न करनी पड़े
नानी-दादियों के जमाने की,
मशीन सब काम नहीं कर सकती
न ही इससे करवाया जाता है।
अक्सर मजदूर सस्ता मिल जाता है
आसमान से नहीं टपकतीं बाजार में
सुंदर पैकिंग वाली रेडीमेड चीजें।

बचत और बजट

सुबह लेट उठते हैं
फिर हड़बड़ी करते हैं
जल्दी से नहाने की
झटपट नाश्ता करते की-
पांच मिनट बचाने के लिए
कहीं देर न हो जाये
दफ्तर पहुंचने में,
मॉल में चाहें लुट जायें
पर रिक्शे वाले भैया से
और पटरी पर सब्जी बेचने वालों से
एक-दो रूपये जरूर कम करवाते है :
पैसे और वक्त की बचत के लिए
अक्सर हम ठीक से
ध्यान नहीं दे पाते-
क्या मामूली है, क्या खास है
क्या जरूरी है, क्या विलास है
किस आइटम पर
कितनी कटौती करनी है
कहां बचत करनी है
कैसे बजट बनाना है
कहां और कब
कितना काबू रखना है
किसका हिसाब रखना है।

High-Speed Life

सुबह उठकर मिस्ड कॉल चैक करता हूं
रात में आये मैसेज पढ़ता हूं
फोन को चार्जिंग पर लगाता हूं
मॉर्निंग में अखबार भी तो पढ़ना होता है
काम करते हुये
वाटसएप पर भी ध्यान रखना पड़ता है
फेसबुक खोलता और देखता हूं
शाम को तो अपुन की फैमिली का
टीवी देखने का स्लॉट होता है
सचमुच मैं बहुत बिजी रहता हूं
न सोचने का टाइम मिलता है
न किसी दोस्त के घर जाने का
न तो ठीक से काम कर पाता हूं
न ही रात को आराम कर पाता हूं
खेलने-कूदने की तो बात ही छोड़ो
सफर का आनंद भी नहीं ले पाता हूं
बड़ी मुश्किल से वक्त निकालता हूं
सुबह नहाने के लिए
टॉयलेट जाने के लिए
खैर लंच डिनर तो
शोरशराबे में ही हो जाता है
यूं ही टाइम पास हो रहा है
जिंदगी दौड़े जा रही है
टेक्नालॉजी की रफ्तार से।

तुम हो मेरी मुठ्ठी में

मेरे पास सिम्पल मोबाइल हैंडसैट है
उसे भी अक्सर साइलेंट पर रखता हूं
फिर भी बेवक्त जब वाइब्रेशन होता है
तो परेशान हो जाता हूं
वो कभी भी फोन कर देती है
मैं उससे बात भी कर लेता हूं
पर उसका जी कभी भरता नहीं
मुझे भी उसकी बातें प्यारी लगती है,
मैं टॉयलेट में फोन नहीं ले जाता
मीटिंग में क्रॉसटॉक मुझे अच्छी नहीं लगती
कभी फाइल-किताबों में बिजी होता हूं
थियेटर में स्विच ऑफ करना पड़ता है
ट्रैफिक के शोर में पता नहीं चल पाता
कभी झपकी लग जाये और गहरी नींद में तो
सुध ही नहीं रहती
ऐसे चंद मौको पर
फौरन न उठा पाओ कॉल तो
वो कुप्पा हो जाती है
मेरा नम्बर झट से ब्लॉक कर देती है
ज्यादा गुस्सा हो जाये तो
सिम निकाल कर फेंक देती है
सोचता हूं
स्मार्टफोन और वाट्सएप वालों का
क्या हाल होता होगा।

बुद्धू बक्से का कमाल

ऐसे खाने घर में कोई बनाता है?
ऐसे कपड़े कोई पहने सकता है?
ऐसे सवाल एग्जाम में आते हैं?
मास्टरशैफ – एफटीवी – केबीसी जैसे
ऊलजलाल कार्यक्रम चलाकर
लोगों को बेवकूफ बना रहे हैं
उलझाकर तिलिस्मी दुनिया में
चैनल खुद पैसा कमा रहे हैं
विज्ञापनों को बार – बार दिखाकर
एक और ब्रेक के नाम पर
बस ड्रामेबाजी चल रही है
पढ़े – लिखे और अनपढ़
सारे व्यस्त और मस्त हैं
क्यूंकि टीवी देखने में
दिमाग की जरूरत नहीं होती
डबल टाइम पास हो जाता है
कुछ सीरियल को देखते हुये
कुछ बाद में उनकी चर्चा करते हुये।

बाबा का बिस्कुट

हेमा मालिनी का विज्ञापन
कितना भी दिखलाओ
मैं बाबा का बिस्कुट नहीं खाऊंगा
मुझे चिढ़ हो चुकी है
न मैं गंगा में नहाऊँगा
न नारंगी रंग वाले कपड़े पहनूंगा
और दूध पीते हुए पता चला गया
कि वह गाय का है
तो उसे उलट दूंगा
हलक में उंगली डालकर पर
अपनी उबासी का हायराम क्या करूं
मरी जब आती है
राम की आवाज निकलती है
फिर भी शुक्र है
जय श्री राम की नहीं।

मेरा भक्त

वह आता रहा है
मेरे पास
बचपन से
एक्जाम में पास होने के लिए
नौकरी लगवाने के लिए
शादी करवाने के लिए
प्रमोशन पाने के लिए
टांसफर के लिए
अब भी आता ही रहता है
अपने बच्चों की चाहतों के लिए
मौत नजदीक है
शरीर कमजोर हो गया है
अब वह मुझको पाने के लिए
चक्कर लगाता रहता है
वह ताउम खुशफहमी में पड़ा रहा
मैं भी उससे मजे लेता रहा
आखिर खेल का अम्पायर हूं मैं।

हुदहुद की रात में

परसों रात भर
मुझे नींद नहीं आयी
तेज हवा चलती रही
दरवाजे बजते रहे
लगता था पूरे मौसम की बरसात
एक रात में हो जायेगी
कुदरत के सामने किसी का जोर नहीं चलता
बस उसे हर किसी को मंजूर करना ही पड़ता है
हम हर जगह छोड़ कर तो कहीं जा नहीं सकते
न ही छतरी टांग सकते हर किसी के सर पर,
टीवी पर देखने से नहीं
कमरे की विंडो से देखने पर
खुद महसूस करते हुए
हवा के थपेड़े
अहसास होता है
समुद्रीतट के उन लोगों की तकलीफ का
जिनके गांवों और शहरों में
हर साल तूफान आता है
सुबह खिड़की के बाहर
एक गौरेया बैठी थी सहमी सी
अपने भीगे पंखों को समेटे हुए
उसे देखकर खयाल आया
पास वाली झुग्गी का,
शाम को जाकर देखा तो
इस आशियाने का
कहीं नामोनिशान नहीं था
पर हमारे पड़ोसी को सता रही थी
मोबाइल चार्ज न होने की फिक्र
क्यूंकि कल रात से
बत्ती नहीं आ रही थी।

जीवंतता

कल ढाबे पर बैठा जब मैं
शाम की चाय पी रहा था
तो ढाबे वाले भाई ने बताया कि
आपके बंगले के कोर्टयार्ड में
एक आम का पेड़ है,
आज सुबह मैं
जब नहाकर बाहर निकला
तो मेरी नजर उस पेड़ पर पड़ी
जिस पर ढेर सारे आम लदे थे
कूदकर तोड़ लेने का मन हुआ
पर कमर मे दर्द था
इसलिए जमीन पर
पेड़ से टककर गिरी
कुछ कच्ची अमियां ही उठा लीं
वाकई कितनी हैरान की बात है
करीबन सात महीने होने को आये
मुझे इस घर में रहते
पर आज तक इस पेड़ को नहीं देखा,
जब ऑफिस के लिए पैदल निकला
तो रास्ते भर
इधर-उधर लगे पेड़ों को
निहारता रहा
कितने ऊंचे, कितनी वेरायटी के
करीने से सिमेट्री में लगे पते
नाजुक टहनियाँ पर झूलते
कितनी ठोस जड़ें, कितने हरे-भरे
गर्दन उठा-घुमा कर
गौर से देखता रहा सब तरफ
कमर का दर्द मानो भूल ही गया
जिधर भी नजर जाती
तो कुछ नया ही नजर आता :
बाजार में लेमनसोडा का ठेला
लगाने जाता आदमी
मोटरसाइकिल पर दूध के डब्बे टांगे
पिंड के सरदार जी
मां के साथ आटो का इंतजार करते
नन्हें स्कूली बच्चे
रेलवे फाटक पर डंडे गिराने वाला
सरकारी मुलाजिम
गर्मी में तारकोल की सड़क बनाने में
मशगूल मजदूर
सब मानों कह रहें हो मुझे
अपनी बात (कविता) लिखना तो
उसमें हमारा भी जिक्र जरूर करना
सुबह का नाश्ता करने उसी ढाबे पर बैठा तो
सामने ही लालफूलों वाला सुंदर पेड़ नजर आया
मैंने पूरी बात बताई ढ़ाबेवाले को तो
उसकी छोटी बिटिया बोली-
अंकल, आम का पेड़ तो सबसे पहले
मैंने देखा था
और पापा को तो मैंने ही बताया था
वो तो टिफिन धोने में ही बिजी थे

मैंने एक अमिया उसे दे दी
वो प्यार से उसे कुतरने लगी
और मैं सोचने लगा :
वर्कशाप में रोज दिखने वाले
क्वालिटी के स्लोगन पर
हमारी नजर नहीं जाती
न ही ऑफिस की दीवारों पर लिखे
कबीर के दोहे
हमें दिखाई देते हैं
ठीक वैसे ही जैसे रोज
गायी-पढ़ी जाने वाली
आरती और अरदास के शब्दों के भाव
हमारे मन में नहीं उतरते,
पढ़ा था कई बार कई जगह
सजगता के बारे में
आज थोड़ा समझ में भी आया-
हवा में उड़ती तितली
और जमीन बुहारती सफाईवाली
मुझे एक-सी खूबसूरत लगीं
साइकिल की आवाज सुनाई देने लगी
लोग चिड़ियों की तरह दिखने लगे
और सड़क पर घूमने कुत्ते
मुझको आज उतने आवारा नहीं लगे।

डाल–डाल पर बसेरा

हम गांव में रहते थे
बम्बई में फौज की
नौकरी करने वाले
मेरे मामा
हमसे मिलने आये
रास्ते में जगल था
एडवेंचर के लिये
वे वहां उतर गये
घर आये तो
बड़े फक्र से
उन्होंने दिखाया घोंसला
जो वह तोड़कर लाये थे
उसमें चिपका जुगनू
रात को रोशनी देता था,
मां ने खूब डांट लगाई
अपने बड़े भाई को
किसी चिड़िया का घर
उजाड़ने के लिये–
आज जब किसी ने बताया
विश्व गौरेया दिवस का
तो वह दोपहर
मुझे याद आ गई।

घर की मुर्गी दाल बराबर

मेरा घर पार्क के सामने है

जिसमें सुबह आते हैं लोग

टहलने के लिए

दूर–दूर से

बैठकर अपनी गाड़ियों में

मैं सोया रहता हूं,

हरिद्वार के निवासी

गंगा में रोज डुबकी नहीं लगाते।

कोयल और कौआ

तुम कोयल हो मैं कौआ हूं,
हम दोनों एक-से पाखी है
तुम कूकू-कूकू करती हो
मैं कांव-कांव करता हूं
हमको लडवाने की कोशिश में
जग वालों ने यह बात रची-
'तुम मीठा सुर लगाती हो
मैं कड़वी जुबां चलाता हूं'
हम दोनों काले-काले है
पर सच्चे दिल वाले है
अपनी-अपनी बोली है
पर एक हमारी भाषा है
दुनिया में हो भाईचारा
यही हमारी आशा है
भोर हुई उठ जाते है
सांझ हुई सो जाते है
एक पेड पर रह लेते
एक गगन में उड़ते है
चाहे नहीं दिमाग हमारे
दिल तो हम भी रखते है
इंसां से बेहतर हैं हम
आपस में नहीं लड़ते है
चाँच में जितना आ जाता
उतना ही खा लेते हैं
नहीं जमा करते कुछ भी
लोभ नहीं हम करते है,
श्राद्ध में होती पूजा मेरी
बाकी दिन कंकड़ पड़ते है
कोयल दीदी, तुम ही बतलाओ
ये सब क्यूं वे करते हैं।

गोरखपुर की याद

किसी ने लिट्टी खिलाई
किसी ने डोसा खिलाया
यहां के लोग से
मैंने बहुत प्यार पाया
कुछ सीखा और कुछ सिखाया
चीजों को थोड़ा सा आगे बढ़ाया
कुछ काम तो किया
पर कुछ कर न पाया
कोई खुश रहा, कोई नाराज भी
सबसे एक नया रिश्ता बनाया
किसी को डांटा किसी को रूलाया
खुद पर हंसकर औरो को हंसाया
मांगी माफी, शुक्रिया भी किया
फैमिली से दूर रहकर
पड़ोसियों को गार्जियन बनाया
लोग छोड़ने आये स्टेशन पर
विदाई में आंखों को नम पाया
दाना-पानी लिखा था इतना ही
चंद दिनों का साथ बिताया
यादें लेकर खट्टी-मीठी
चलो चलने का वक्त आया
भूलचूक लेनी देनी साथियों
आपसे बहुत कुछ पाया।

यह कैसे संभव है

बाल उलझे रहें
हाल सुलझा रहे
यह कैसे संभव है
मन में हो वेदना
तन चंगा रहे
यह कैसे संभव है
घर में झगड़ा हुआ
दफ्तर शांत रहे
यह कैसे संभव है
कुदरत उजड़ती रहे
विकास होता रहे
यह कैसे संभव है
दिन में गलतियां हो
रात नींद आया करे
यह कैसे संभव है
है सब कुछ गुंथा हुआ
तो देखें अलग-अलग
यह कैसे संभव है।

मुफ्ती का मजा

जब आज सुबह देखा
मैटाडोर पर चढ़कर
पार्क में लगे पेड़ से
जामुन तोड़ते हुए
दो आदमियों को
तो मुझे पहले तो थोड़ा अटपटा लगा
पांच-दस रूपये के खरीद नहीं सकते
पर बचपन की बातें याद आयीं तो
मन ने कहा
ज्यादा मजा आता है:
कटी हुई पतंग लूटने में
लूटी हुई पतंग उड़ाने में
दावत में गोलगप्पे खाने में
छबील का पिंक दूध पीने में
लोकल बस और ट्रेन में
बिना टिकट सफर करने में
दस किलो आटे के कट्टे के साथ
एक साबुन की टिक्की फ्री पानें में।

और सब ठीक-ठाक

वो सीढियों में उतर रहे थे
दोनों हाथ पैंट की
जेबों में डाले हुए,
मैंने उन्हें नमस्ते की
दोनों हाथ जोड़कर
हूं-हूं करते हुए वो बोले
और सब ठीक है।
मैं क्या जवाब देता
सब बहुत फार्मल हो गया है
हम किसी का हाल
सचमुच में जानना नहीं चाहते
बस हामी ही तो भरवाते है।
बढ़िया हो? ठीक हो?
कोई रूककर कुछ बताने लगे
अपनी परेशानी बीमारी तो
कभी मजबूरी में
शायद सुन भी लें
पर कह देते है
रूखसत होते हुए
मां की मौत खबर सुनकर भी:
''और बाकी सब तो ठीक-ठाक है
चलो फिर ओके ...
अपना ध्यान रखना''।

अचानक याद कर लिया

उसका फोन कभी कभी ही आता है
पर जब आता है तो
केवल काम से ही आता है
वह प्रोफेशनल है
बेमतलब किसी को रिंग नहीं करता
जब भी मुझे मैसेज करता है
तो ट्रेन का कोटा करवाने के लिए
मैसेज में वह तारीफ भी कर देता है
मेरी कविताओं की,
घड़ी का समय देखकर
गुड मार्निंग या गुड ईवनिंग लिखता है
12 बजे हों तो गुड नून लिख देता है:
टिकट कनफर्म हो जाये तो कभी
थैंकस का मैसेज भी भेज देता है
पर नहीं हो तो मेरी कोशिश के लिए
कभी शुक्रिया नहीं करता,
कई महीने बाद
जब जरूरत महसूस होती है तो
वह मुझे फिर याद कर लेता है,
जब उसने लिखवाया मुझसे ही
मेरा नम्बर अपनी प्राईवेट डायरी में:
तो मैंने गलत समझा था कि
वह मुझमें या रेलवे में दिलचस्पी रखता है
दरअसल वह बहुत समझदार है
सिर्फ इस्तेमाल के लिए
नम्बर रखता है
काम की सीट पर बैठे लोगों के।

बातचीत करते हुए

जब हम किसी से
बात कर रहे होते हैं
तो अक्सर सुनते कम
और सोचते ज्यादा हैं -
जब अपनी बारी आयेगी तो
क्या जवाब देना है
किस बात को पकड़ना है
और जैसे ही मौका मिले
अपनी बात को कह देना है
या फिर खुद से
बात करते रहते हैं
ऐसा कहेंगे - वैसा करेंगे
फिर यह होगा तो वह होगा,
बॉलिंग और बैटिंग के जुगाड में
मन लगा रहता है
चुपचाप फील्डिंग करने में
मजा नहीं आता।

दो अक्टूबर की छुट्टी

परसों था दो अक्टूबर
राष्ट्रपिता गांधी जी की
जन्मतिथि पर
राष्ट्रीय अवकाश
सारे सरकारी ऑफिस और स्कूल - कालेज बंद
इस दिन कहीं कोई झंडा नहीं फहराया जाता
न ही है यह ईद - दीपावली - क्रिसमिस
जैसा कोई त्यौहार
जिसे चाहे सब लोग न मनाएं
किंतु उस धर्म - समुदाय विशेष के
मानने वाले तो मना लेते हैं,
जब मैंने पूछा अपने सहकर्मी से -
''कैसे बितायी छुट्टी इस साल
बापू - शास्त्री के बर्थडे की?''
तो वे बोले -
''सुबह खूब देर तक सोये
टी - शर्ट और जींस पहनकर
बाजार गए चाउमीन खाने
दोपहर बाद टीवी पर एक्शन मूवी देखी
गपशप मारी नौकर को गरिआया
शाम को मंदिर टहल आए
वहां हनुमान जी की आरती सुनी''
मैंने सोचा -
बहुत खूब बरखुदार
तुमने गांधी के व्रतों की
खूब धज्जियां उड़ाई
वो थोडा रूककर बोले -
''मंडे को होता 2 अक्टूबर
तो मजा आ जाता
वीक - एंड मिलाकर
हम घर ही चले जाते
मां - बाप से मिल आते''

तीस जनवरी

ग्यारह बजे, साइरन बजा
वो सब इकठठे हुए
जो सरकारी नौकर है
जो अनुशासन को तरजीह देते हैं
जो प्रोटोकॉल में यकीन करते हैं
जो रस्में निभाते हैं
और वो भी
जो गोडसे मंदिर की बात करते हैं
पर मैं शामिल नहीं हुआ मजलिस में,
यह रचना लिखकर ही
गांधी जी को याद कर किया
औपचारिकता हो गई
2 अक्टूबर जैसी,
सब हंस खेल रहे हैं
मेरा मन उदास है
सुबह काली कमीज पहनने का मन
पर वो भी दिखावा सोच नहीं किया
बिना नहाये आफिस चला गया
और काम में जुट गया।

जय माता दी

हवा में नारे लग रहे थे
लोग हुंकारे भर रहे थे:
जोर से बोलो
आवाज न आई
मिलकर बोलो
सारे बोलो
आगे वाले
पीछे वाले
नीचे वाले
अंदर वाले
बाहर वाले:
मैं भी बुदबुदाने लगा
भैंस मैया की जय
सतलुज मैया की जय
गांव मैया की जय
सांवली मैया की जय
सरकारी मैया की जय
अपनी मैया की जय
सबकी मैया की जय
माता की माता की जय
मां की गाली बकने वाले देश में
नहीं कहलवा सकता : भारतमाता की जय
पर सारे मिलकर बोलो
धरतीमाता की जय
मिट्टी माता की जय।

नेमड्रापर *(यानी नाम टपकाने वाला)*

कल आया मुझसे मिलने
एक आदमी
आते ही नाम गिनाने लगा
मंत्री जी हमारे रिश्तेदार हैं
चेयरमैन हमारे लंगोटिया यार है
बाबा जी तो हमें अपना बेटा मानते हैं
अंबानी हमारी बेटी की शादी में आये थे
केजरीवाल के साथ हमारे चचा पढ़े थे
राजेंद्रबाबू के गांव के हम रहने वाले हैं
जब उठ कर जाने लगा तो बोले-
अब तो आप पहचान ही गये होंगे
हम क्या चीज हैं,
मैंने सिर हिला दिया
मन ही मन सोचते हुए कि
न कहा तो
पता नहीं
कितने ओर नाम गिरा देगा वो
जान तो गया ही था मैं:
खोखले ही अपनी पहचान
लिफाफे से कराते हैं।

सोशल एनीमल

जब मैं नई जगह ट्रांसफर होकर आया
तो यहां रह चुके एक दोस्त ने बताया-
कुत्तों और सांप से जरा सावधान रहना,
पता नहीं वो स्थूल जानवरों की बात कर रहा था
या फिर आदमी में बैठे सूक्ष्म जानवरों की
हर किसी में कई जानवर होते हैं
आदमी में कुत्ता होता है
जो अक्सर भौंकता है
और कभी काटने को दौड़ता है
आदमी में सांप भी होता है
जो डसने की कोशिश करता है
लोमड़ी भी जो चालाकी से वार करती है
गिरगिट भी जो अपने रंग बदलती रहती है
और भी कई प्राणी बसते हैं मगर
शेर जैसी दिलेरी और हाथी जैसी मस्ती
आजकल के लोगों में नहीं दिखती
गाय जैसे सीधेपन की तो बात ही छोड़ो
हैं चाहे चूहे जैसे पर
सब खरगोश बनने की दौड़ में जुटे हैं
बिल्ली जैसा दांव लगाने की कोशिश में
बंदर की तराजू लेकर बाजार में बैठे हैं।

सावधान
गालियां बकता है
जोर से गुर्राता है
काटता तो है ही
डस भी सकता है
यह जानवर नहीं
आदमी है
जरा बचकर रहना!

अटकी हुई सुई

अक्सर छोटी-छोटी बातों में ही उलझे रहते है
उन्हीं पर बहस करके रोज लड़ते-झगड़ते है
रोते हैं, रूलाते हैं, झल्लाते हैं, झेलते हैं
रोज वही रिपीट होता है
जब उसी रास्ते पर चलेंगे तो
वहीं पहुचेंगे जहां रोज पहुंचते है
नई राह अपनायें-नई उम्मीद जगायें
खुद आगे बढ़ें दूजों को भी बढ़ाये
औरों को समझाने की बजाय खुद को समझें
अपनी गलती न भी लगे तो भी मानें
रिश्ते को सहेजने में अपनी जिम्मेदारी निभायें
अपने रूठे हुये दोस्त को दिल से मनायें
सुई जो अटक जाती है एक जगह
पुराने जमाने कें ग्रामोफोन रिकार्ड की तरह
उसे आगे बढ़ाकर नये सुर लगायें
भटकाव और अटकाव के लूप से बाहर निकलें
कॉफी-हाउस में बैठे हुए वही बातें न दुहरायें
गिले-शिकवे भूलकर जिंदगी का जश्न मनायें।

कबाड-1

कितनी भी बड़ी हो अलमारी
छोटी पड़ ही जाती है
पुरानी चीजें हम फेंक नहीं पाते
घर म्यूजियम बनता चला जाता है,
इस साल दीपावली पर
मैंने पांच बोरे कूड़ा निकाला
पर जब देने लगा कबाड़ी को
तो पापा बोले: इसे मत फेंको
यह मेरी सास की दी हुई घड़ी है
चलती नहीं पर उनकी यादगार है,
ढूंढने पर मुश्किल से मिलती है
धूल से जमी किताबें
खुद इस्तेमाल नहीं करते
पर किसी को देते भी नहीं
शायद कभी काम आ जायें-
कबाड़ी से पूरी कीमत भी वसूलते हैं
क्या यह अहसान काफी नहीं कि
उसने हमारा कचड़ा ले लिया।
वैसे रद्दी पैदा भी बुहत होती है
जीरोक्स वाले मेरे ऑफिस में
एक ही लैटर की कई कापी आ जाती हैं
मार्क होकर ऊपर वालों से
जो सिर्फ एकतरफ ही छपी होती हैं
दूजी ओर मैं कविता लिख लेता हूं
फिर भी कभी तो फेंकना ही पड़ेगा
इन कागजों को मोड़कर-फाड़कर।

कबाड़ – 2

पुराना कबाड़ निकालते वक्त
हम संभाल कर रख लेते है
कुछ चीजों को सोचकर कि
कभी काम आ जायेंगी
कुछ कागज देखने में मजा आता है
उस वक्त
हम कैसा सोचते थे
क्या कुछ करते थे
कितनी सस्ताई थी
कैसी हमारी लिखाई थी
अतीत से चिपकने में
सुकून चाहे न मिले
पर अलसा जाता है मन
एलबम में पुरानी शक्लें देखकर
यादों में टाइम पास हो जाता है
बस सोच रहा था
अपने नये दफ्तर में बैठा
मेरी जगह आये नये अफसर ने
ऑफिस के कमरे की
सफाई करते वक्त
क्या फेंका होगा
क्या रखा होगा–
वहां गांधी जी की फोटो भी थी!

सापेक्षता

किसी को मेरा वेतन बहुत ज्यादा लगता है
मुझे औरों का काम आराम वाला लगता है
खड़ी हुई दो ट्रेनों में से चल पड़ती है एक
उल्टी तरफ जा रहे हों जैसे, हमें लगता है
चक्कर है यह सब संदर्भबिंदु व स्थिति का
कौन गलत कौन सही, पता नहीं चलता है
अमीरों के कुछ रिलेटिव गरीब भी होते हैं
सिर्फ कुछ लोग हंसतें है, अधिकतर रोते है
मैं कहां खड़ा हूं और किधर मुझे जाना है
यह सवाल ही अक्सर खुद से पूछ लेता हूं
धरती घूमती हुई नहीं दिखती कभी मुझको
किताबों में लिखा है इसलिये मान लेता हूं।

इंजैक्शन और इंफैक्शन

बचपन में जो इंजैक्शन
लग जाते हैं हमें
उनका असर जिंदगी भी बना रहता है
शाखा जड़ तक अंदर घुस जाती है
और कितना भी ऊपर से
खुद को सेहतमंद दिखा लें
वायरस अंदर बना ही रहता है
दंगों के समय
बीमारी सामने आ ही जाती है
इंफैक्शन तो होगा ही नफरत का
चाहे इजैक्शन मजहब का हो
या जातपात का
या लिंग-रंग भेद का
या क्षेत्रवाद का
या फिर राष्ट्रवाद का।

दर्द और हमदर्द

कुछ दिनों से
मेरी पीठ में दर्द होता है
किसी को बताता हूं तो
कोई सलाह देने लगता है-
यहां जाओ, उसको दिखाओ
पैदल घूमो, हार्डबैड पर सोओ
यह मत खाओ-यह मत पीओ
कोई डराकर सावधान करता है:
उसे भी ऐसा ही हुआ था
रीढ़ की हडडी टेढ़ी हो गई थी,
कोई होम्योपैथी सुझाता है
कोई आयुर्वेदिक की वकालत करता है,
आज सुबह मिला
एक रिक्शे वाला
जिसकी कमर झुकी हुई थी
उससे जिक्र किया तो वह वोला-
यह सब तो होता रहता है
शरीर जो है
बस काम में लगे रहो,
कुछ सच्ची हमदर्दी जताते हैं
ज्यादातर फिक्र दिखाते हैं,
पर सोचता हूं
रोज का रोना क्या किसी को कहना
दर्द को तो पड़ेगा खुद ही सहना
इसलिए आज जब पूछा किसी ने
तो मैंने कहा-
''सब चंगा है।''

सहनशीलता

जब पिता जी चाय पीते थे
सुड़कसुड़क की आवाजें करते हुए-
तो मैं झुझालाकर
दूसरे कमरे में चला जाता था,
साथ में बैठे छोटे भाई को
चपचप करते हुए
रोटी खाने पर
कभीकभार चपत भी लगा देता था-
पर अब
ऑफिस में बॉस
वैसे ही तरीके से चाय पीते है
तो चुपचाप बैठा रहता हूं,
हॉस्टल की मैस में
नानवेज की टेबुल पर
साथ बैठकर खाना खा लेता हूं
दूसरे लोग भी देखते रहते हैं
बिना कुछ कहे
जब मेरी दाढ़ी में दाल गिर जाती है,
दादा जी बीमारी में ज्यादा खांसते थे
तो उन्हें पापा भी कुछ सुना देते थे
पर ट्रेन में चल रहे खर्राटों से
कितनी भी खलल पड़े नींद में
सहयात्री को मैं कुछ नहीं कह पाता
पर जब घर जाता हूं अभी भी तो
पिता जी के साथ
चाय ठीक से नहीं पी पाता हूं
अपनों को सहना मुश्किल होता है
उनको हम अक्सर टोकते रहते हैं
दूजों से कहना मुश्किल होता है
उन्हें कभी नहीं रोक पाते हैं
कुत्तों के भौंकने या ट्रैफिक के शोर से
रात को नींद टूट जाये तो
तो हम कुछ नहीं कर सकते
न किसी को नखरे दिखा सकते
न किसी से शिकायत कर सकते
बस अपनों पर ही
हमारा सारा जोर चलता है।

गर्मी का मौसम – 1

गर्मी बहुत है
नींद नहीं आती है
करवटें बदलते
रात गुजर जाती है
भीग जाता है तकिया
बालों की बूँदों से
पसीने में
फिर भी अधमुँदी आंखों में
जब आता है सपना
उस पड़ोस वाली झुग्गी का
जहाँ न बिजली है
न पंखा है न पानी है
तो मैं डरता हुआ
सो जाता हूँ
कहीं मेरे घर की
बत्ती-पानी भी
गुल न हो जाए।

गर्मी का मौसम – 2

पड़ती थी गर्मी तब भी
चलती थी तेज लू भी
आता था पसीना भी
पर नहीं होती थी इतनी बेचैनी
हाथ का पंखा होता था
कच्ची मिट्टी का फर्श होता था
गोबर की लिपाई कर लेते थे
बरामदे में दिन बीत जाता था
नल के नीचे बैठकर
जब मन किया नहा लिये
ताजा पानी से
पानी का छिड़काव करके
रात को छत पर सो जाते थे
खाट बिछाकर
मच्छर कम होते थे
इतने खतरनाक भी नहीं थे
बीस मई को रिजल्ट आता था
फिर पूरे तीन महीने की छुट्टी
कोई होमवर्क नहीं मिलता था
हम नानी के घर चले जाते थे
टेमपरेचर देखने के लिय
घर में टीवी नहीं था
रिश्तों में गरमाहट होती थी
मौसम की गर्मी सहन हो जाती थी
घड़े का पानी पी लिया करते थे
जब ज्यादा गरमी पड़ती थी तो
कभी – कभार
मां बना दिया करती थी
कच्ची लस्सी और शिकंजी।

कुहरे का मौसम

बाहर तेज और घना कुहरा है
निकलने का मन नहीं करता
ठीक से दूर तक नहीं दिखता
बहुत संभल कर चलना पड़ता है,
आगे के तीन कदमों तक ही
सड़क पर नजर बढ़ाये
धीरे – धीरे आगे बढ़ रहा हूं
अंदर की रोशनी के भरोसे
गंतव्य की तरफ
जैसे – जैसे नजदीक पहुंच रहा हूं
कुहरे से घबराहट
कम होती जा रही है
ठिठुरन भी उतनी नहीं लग रही
जितनी घर से पहला कदम
बाहर निकालते हुए
महसूस हुई थी
ठीक वैसे ही जैसे ठंड में
नहाने के लिए शरीर पर
पानी का पहला लोटा
डालने पर ही
ज्यादा ठंड लगती है,
काम शुरू कर दो तो
कुछ हो ही जाता है
अगर हिम्मत करो तो
कोई रास्ता निकल ही आता है
करने का तरीका भी मिल जाता है
खाना भी जैसा – तैसा बन ही जाता है।

ठंड का मौसम

ठंड के दिनों में सुबह
रजाई से निकलने को
मन नहीं करता
बारबार मोबाइल पर टाइम देखता हूं
दस मिनट और अलसा लूं
पर उठना ही पड़ता है
जब ऑफिस खुलने का वक्त हो गया हो
आधा घंटा लेट तो सभी आते हैं
वैसे मुझे लगता है
सबकी हाल यही होती होगी
कौन कितना अफोर्ड कर सकता है
बस इतना ही फर्क है:
सही टाइम स्कूल पहुंचने को मजबूर बच्चे
उनके लिए नाश्ता तैयार करने वाली मां
लैबर चौक वाले दिहाड़ी के मजदूर
ढाबा चलाने वाले सरदारजी
या शुगर के वो मरीज
जिन्हें डाक्टर ने सुबह की सैर के लिए बोला है,
रात को टाइम से सो सकते है
बस टीवी के प्रोग्राम जगाये रखते हैं
यह भी अफोडिबिलियी और प्रायरिटी की बात हैं-
इम्तहानों के दिनों में बच्चे
टाइम से सोते है
टाइम से जगते हैं
टाइम से पढ़ते हैं,
आइटम क्रिटिकल हो जाये
तो फाइल पर
हम फैसला जल्दी लेते हैं
और अगर आग लग जाये तो
ठंड-बरसात में भी गर्मी आ जाती है
फिर नींद और रजाई सब भूल जाती है।

मौसम को तो बदलना ही है

हम हर मौसम को
कोसते रहते हैं-
गर्मी बहुत तेज है
ठंड बहुत ज्यादा है
बरसात थम नहीं रही
बरसात पड़ नहीं रही-
इन्हें सहना ही होगा
मजबूरी से या मजबूती से,
इंसानी छतरी का सीमित इंतजाम
कब तक और कितना टिकेगा
अबूझ कुदरत के सामने
उस नीली-छतरी वाले की:
जो न दिखता है
जो न सुनता है
पर करता है
अपने मन की,
उसकी रजा में राजी रहना और
मंजूरी ही एकमात्र विकल्प है-
आखिर यह मौसम भी बदलेगा ही
और वक्त गुजर जायेगा।

मौसम का हाल

बचपन के गांव में
बड़े लागों के पास घड़ी भी नहीं होती थी
न ही हमारे पास थे इंसटैंट न्यूज के साधनः
मुर्गा बांग देता था
तो पता लग जाता था
भोर हो गयी
पक्षी चहचहाने लगते तो
उठने का वक्त हो गया
सूरज सिर पर आ जाये तो
दोपहर के खाने का समय है
आकाश में लाली छाने लगे
सांझ ढले गगन गूंजने लगे
परिंदों की अवाजों से तो
तो पता लग जाता था कि
वक्त हो गया
हमारे भी घर वापिस लौटने का,
कल रात जब बहुत सारे मेंढक
एक साथ टर्राने लगे
तो मुझे लगा कि
तेज बरसात आने वाली है,
इंटरनेट और टीवी से
मौसम का हाल जानने की जरूरत
उनको ही ज्यादा है
जो शहरों के बंद कमरों में रहते हैं
जिन्हें आसमान देखने की न तो फुरसत होती हैं
न ही वहां इतनी मस्त अदाओं में कुदरत होती है
कीटपतंगों के बत्तियों पर मंडराने से
कोयल की कूक से, पिल्ले की हूक से
खिलते हुए फूल से, खेत की फसल से
गांव वालों और आम आदमी को
मौसम का बेहतर अंदाजा लगता है।

कार्य–कर्त्ता

कभी लगता है
बस मैं ही खास काम कर रहा हूं
बाकी लोग ठीक से कुछ नहीं करते
कभी लगता है
बस मैं ही इतना खाली बैठा हूं
बाकी सब कुछ–न–कुछ कर रहे हैं
कभी लगता हैं
कोई कुछ नहीं कर रहा है
सब अपने आप हो रहा है
हम सब टाइम पास कर रहे हैं
उसी में कुछ काम हो जाता है
वक्त ही सब कुछ करा लेता है हमसे
और हम उसे
अपना किया मान लेते हैं।

मेरा हमसफर

कंधे पे झोला
झोले में दुनिया
दुनिया में झमेला
झमेले में अकेला
अकेले ही आया
अकेले ही जाना
यही है किस्सा
बस यही गाना
हकीकत में है सपना
यहां कुछ नहीं अपना
काम मेरा कुछ खास नहीं
देखना – सुनना – सोचना – कहना
सही के लिए लड़ना
सच के लिए अड़ना
चप्पलें घसीटते पैदल चलना
सड़कें नापना और कभी – कभार
जब मूड बन जाये तो
फेसबुक पर कविता लिखना।

काश

दो नम्बर और आ जाते बेटे के तो
आईआईटी में कम्प्यूटर मिल जाता
तीन सेमी और होता मेरा कद तो
मैं आईपीएस बन गया होता
चार रन और बनाये होते पहली इनिंग में तो
इंडिया यह मैच न हारती
एक वोट और मिल जाता तो
मैं एमपी बन जाता
पांच मिनट पहले पहुंच जाती ट्रेन तो,
गांव जाने वाली लास्ट बस मिल जाती
एक रूपया कम होता ऑफर तो
मैं टैंडर में **L-1** आ जाता:
पर जरा सोचो
कहीं एक मिनट की देरी होती तो
एक्सीडेंट भी तो हो सकता था
इसलिए हमें शुक्र ही करना चाहिए
तो – तो करने से कुछ नहीं होता
बीते की फिक्र और जिक्र छोड़ कर
आगे की ओर देखना और बढ़ना चाहिए
जो अभी है और आज को
खुशी – खुशी मंजूर करना चाहिए।

मिलना – जुलना

कोई नहीं बुलाता मुझे अपने घर
कहीं चेंप ही न जाऊं
रोज–रोज जाने लगूं
उनके बच्चों को पढ़ाई डिस्टर्ब करूं
प्राइवेसी में दखल बनूं
न ही मेरे घर कोई आता है
बिना काम के
अब मैं भी नहीं जाता कहीं
सड़क पर घूम लेता हूं
अखबार किताबें पढ़ लेता हूं
कभी कुछ लिख लेता हूं
पुरानी कापियां खंगाल लेता हूं
यादों में ही जी लेता हूं
वैसे कल सोचा तो पाया
कितने सारे दोस्त बन सकते हैं:
चिड़िया–कौवे और कुत्ते
पेड़–पौधे और पत्ते
हवा, धूप और बरसात
लालिमा की सुबह और चांदनी रात
जमीन की मिट्टी, आसमान के तारे
हाशिये के लोग, कुदरत के नजारे:
बस खुद का विस्तार करने की बात है
थोड़ा अलग से कुछ सोचने की बात है।

दोस्त

सच्चा दोस्त वो होता है
जो हमारी गलतियां तो हमें बतातता है
पर सबके सामने
उनका मखौल नहीं बनाता
हमको जलील नहीं करता
कितनी भी देर हो जाये
वो इंतजार करता है
रूठता–डांटता है, गुस्सा हो जाता है
पर मनाता भी है और मान भी जाता है
हमारी जिंदगी आसान करने के लिए
खुद को वह मुश्किल में डाल लेता है
खुशी और सुख में शामिल चाहे न हो पाये
पर परेशानी में हमेशा साथ खड़ा होता है
बीमारी में अस्पताल मिलने जरूर आता है
उससे कुछ भी कभी भी बात कर सकते हैं
वह हमें कभी भी नापता–तौलता नहीं हैं
दोस्ती का कोई खास दिन नहीं होता
उसे तो दोस्त हर दिन
और हरपल जीना पड़ता है।

घर

घर वह होता है
जहां कोई यह नहीं पूछता कि
इतनी जल्दी फिर क्यूं आ गये
इस बार आप कब तक रहोगे
जैसे दिल हो वहां रह सकते हैं
सोफे पर पैर रखकर बैठ सकते हैं
निक्कर पहन कर घूम सकते है
अपने मन का खाना न बतायें
तो भी वही सामने आ जाता है
जहां जाने को हमेशा मन करता है
पर वापिस आने का मन नहीं होता
कितना भी रह लें मन नहीं भरता
संकोच और झिझक से परे
वहां मन की गांठे खोल सकते हैं
बिना नापतौल के बोल सकते हैं
हंस तो सकते ही हैं रो भी सकते हैं
बाकी दुनिया तो चलती हुई डगर है
बस ऐसे घर पर ही जीना निर्भर है।

आसान और मुश्किल

घर बनाना तो आसान हो सकता है
पर संभालना बहुत मुश्किल होता है
पैदा तो कर ही लेते हैं बच्चे लोग-
पर उनको पालना बहुत मुश्किल होता है
मिल जाती है पदवी पढ़-लिख कर
नेक बनकर रहना मुश्किल होता है
बनाते हैं जिंदगी में रोज नये रिश्ते
पर उन्हें निभाना वाकई मुश्किल होता है।

नजर

आपरेशन हुआ मोतियाबिंद का
मेरी दादी का 80 की उमर में
मेरे पापा का 60 की उमर में
मेरा 40 की उमर में ही
मसलने लगता हूं
अपनी सूजी हुई-आंखे
सोच कर कि क्या होगा
आगे आने वाली पीढ़ी का
तकनीकें और बीमारियां
दोनों बढ़ती जा रही हैं-
बस इलाज की फीस चाहिये।

डाक्टर साईंदास

आज अचानक याद आ गई
अपने कस्बे 'पहासू' में रहने वाले
डाक्टर साईंदास जी की
मैं दस-बारह साल का रहा हूंगा
उस वक्त वो बहुत बूढ़े थे
कमर काफी झुकी हुई थी
बेंत लेकर चला करते थे
पर अपने हर मरीज की
सेहत का हाल जानने
रोज शाम खुद ही
उसके घर चले जाते थे
दुकान पर जब भी
कोई नया मरीज आता तो
वही मामूली से सवाल पूछते
जो हमें अजीब से लगते थे:
टट्टी ठीक से आती है
पतली तो नहीं आती
ऐंठन होती है क्या?
पेट में कैसी आवाज होती है
पेशाब कितनी बार जाते हो
जरा जीभ तो बाहर निकालो
थोड़ा खांसकर दिखाओ,
नब्ज पकड़ कर चैक करते थे
आजकल जैसी कोई बड़ी डिग्री
नहीं थी उनके पास
पर तजुर्बा था और सेवाभाव था
मरीज का दर्द महसूस करते थे
उसकी मन लगाकर सुनते थे
गरीब हो तो फीस कम लेते थे
खरल में दवाईयां कूटकर
सुबह शाम की पुडिया बांध देते थे
खाने पीने का घरेलू परहेज बता देते थे
लोग भी उसी से ठीकठाक हो जाते थे
मरीज को उनसे मिलकर
तसल्ली हो जाती थी
उसकी आधी बीमारी तो
वैसे ही भाग जाती थी
पर अब सब कुछ
बहुत प्रोफेशनल हो गया हैं
शायद वहां भी नहीं मिलते होंगे
साईंदास जी जैसे डाक्टर।

Permanent Marker

कल ड्रांइग बाक्स में
मिल गया मुझे
एक परमानेंट मार्कर
जिसे हाथ में लेकर
मैं सोचता रहा-
कहां लिखूं उससे और क्या-
जैसे कोई छोटा बच्चा करता है
रंगीन पेंसिल पाकर,
दीवार-बोर्ड पर लिखा हुआ मिट ही जाता है
चाहे थोड़ी मेहनत और वक्त लगे
कोई निशान पक्का नहीं होता
उंगली पर लगी वोटिंग की स्याही भी
कुछ दिन में मिट ही जाती है-
वक्त गुजरने के साथ
सब धूमिल पड़ता जाता है,
ट्रांसफर और फैशन तो अस्थाई का अहसास कराते हैं ही
वैसे भी कुछ भी परमानेंट नहीं होता
हर पल नया होता है
हर शै कमजोर होती रहती है
अपने अंत तक पहुंचने के सफर में,
किसी का कोई पक्का ठिकाना नहीं होता
न ही कोई परमानेंट एड्रेस होता है
न ही कम्प्यूटर की तरह
किसी की परमानेंट मैमोरी हो सकती है
यह बात अलग है कि
मानस पटल पर अंकित हो जाता है कुछ
जो सपनों में बारबार आता रहता है
और कोई दाग का धब्बा
खूब रगड़ने-धोने पर भी नहीं उतरता!

सबकी वही चिंताये

हर कोई त्रस्त है
एक से सवालों से
रिश्तों में वो गर्माहट नहीं रही
परिवार छोटे हो गये हैं
लोग सिमटते जा रहे हैं
मोबाइल और टीवी पर बिजी रहते है
कोई घर आ जाये तो
मेजबान वक्त नहीं दे पाते
बच्चे कार्टून देखते रहते है
चॉकलेट की जिद करते हैं
बड़ों की नहीं सुनते
मौसम बदलता जा रहा है
कुदरत के साथ छेड़खानी से,
बच्चे पर पढ़ाई का बहुत बोझ है
मंहगाई आसमान छू रही है
गरीब और गरीब हो रहा है
आम आदमी पिस रहा है
किसी का कोई घर नहीं है
कोई कहीं का नहीं रहा
सब घर से दूर काम में लगे हैं
धूल और धक्के खा रहे हैं
सहनशीलता कम होती जा रही है
खाने-पीने की चीजें
साफ सुथरी नहीं मिलतीं
लाइफ स्टाइल गड़बड़ होती जा रही है
न समय से खाते है
न समय से सोते है
लोगों में स्टेमिना कम होता जा रहा है
मीनिंग वाले गीत नहीं लिखे जाते
सब मतलबी होते जा रहे हैं
बस ठंडी औपचारिकता बाकी है
सब कुछ बाजार बन चुका है
वापस तो नहीं लौट सकते
पर उम्मीद है कि
कभी कुछ हो जायेगा
कोई कुछ करने को आयेगा
बदलेगा समाज
कुछ भले के लिए
अभी तो मन बहला लेते हैं
गुजरे जमाने की बातें कर :
गांव में कैसे रहते थे
डिशकेबुल नहीं था तो
चित्रहार और सडे की मूवी के
इंतजार में कितना रोमांच होता था
ट्रेन में, ढाबे पर हर जगह
ऐसी ही बातें करते लोग मिलते हैं-
रिटायरमेंट तक मेरा घर नही बना
तो क्या होगा!

भूत की वापसी

एक और रेप
एक और स्कैम
एक और रिमिक्स
एक और आइटम सांग
एक और बाबा
एक और स्कैंडल
एक और बम विस्फोट
एक और टीवी चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज:
वही सब रिपोट हो रही है
कुछ भी नहीं बदल रहा है
नाम और जगह के सिवा
बीमार बढ़ रहे हैं
अस्पताल कम हैं
डाक्टर लाचार हैं
महामारी फैलती जा रही है
अखबार बस आंकड़े लिख रहा है
आम इंसान बेबस दिख रहा है।

कुछ कुछ होता है

अस्सी के दशक में
जब बम फटता था
किसी बस में
तो मैं डर जाता था,
ट्रेन के सफर में
जब सहयात्री करते है
जिक्र रेलवे की खामियों का
तो मैं चुप बैठा रहता हूं
जब पकड़ा जाता है
कोई सरकारी अफसर
सरेआम रिश्वत लेते हुये
तो मैं बेचैन हो जाता हूं
जब पढ़ता हूं
छोटी बच्ची से
बलात्कार की खबर
तो मैं शर्म से झुक जाता हूं
मैं क्यूं पुरूष हूं?
मै क्यूं सरदार हूं?
मैं क्यूं रेलवे अफसर हूं?
मेरी कोई गलती नहीं है
फिर भी न जाने क्यूं
मुझे अजीब-सा महसूस होता है
जब इंसान हैवान बन जाता है।

16 लार्ड सिन्हा रोड

कलकता में एक तीर्थ था
उनको देखकर ही ऊर्जा मिल जाती थी
चर्चाओं की तो बात ही क्या
जब चाहे चले जाओ
अपनी तकलीफ के बावजूद
वो दिल खोलकर स्वागत करते थे
सबकी परवाह करते थे
सबका खयाल रखते थे
विचारों से ओतप्रोत थे
समझते थे समझाते थे
प्रूफ सुधारते थे
लेख संवारते थे
लेखक बनाते थे
खुद का नाम छपवाना नहीं चाहते थे
दरियादिल थे
'एकला चलो रे' के जीवंत पर्याय थे
मेरे दोस्त भी थे और गुरू भी
उनके चले जाने से
सूनापन महसूस होता है
अच्छा पढ़ने के बाद
कुछ लिखने के लिए
अब बेझिझक
किसको फोन किया करूंगा
कलकता में कहां जाऊंगा।
(अशोक सेकसरिया जी को याद करते हुए)

ओपनिंग और क्लोजिंग बेलेंस

उठते हैं रोज सुबह
रात के सपने लेकर
जो आधे-अधूरे ही
हमें याद रहते है
मुंह-हाथ घोकर
वो भी भूल जाते हैं
दिन की हकीकत में
कल के छूटे और
आज के नये कामों को
पूरा करने में
शाम को थककर
घर लौट आते हैं,
वक्त ही नही मिलता
बेलेंसशीट बनाने का
अपनी मोरल इंवेटरी
हम कभी ले ही नहीं पाते।

हे नीलकंठिनी!

मुझे शीतलता दो
अपने गेसुओं की घनी छांव तले
मेरा ताप हर लो
अपनी प्यारी मुस्कान से
नजरों से ठंडा पानी पिलाते हुए
मेरे संग चलकर
कुछ कदम ही सही
लंबे सफर की थकान
थोड़ा कम कर दो
मेरे दिमाग का बोझ हल्का कर दो
अपने दिल से सुन-सुनाकर,
मुझे अपना बना लो
मेरा क्रोध पी जाओ
गरल समझकर
मुझे अमन से भर दो!

हिन्द – द्वीप

जहां केसरी कच्छा और खाकी निक्कर ही पहनावा हो
जय श्री राम से ही सबको अभिवादन करना पड़े
पतंजलि के मॉल पर ही परचून और तेलनून मिले
गोडसे को गर्व से शहीद माना जाये
सिर्फ गाय ही जानवर के नाम पर रहे
कमल ही एकमात्र फूल खिलता हो
केवल संस्कृत में ही पढ़ाई होती हो
जहां बस गंगा नदी ही बहती हो
मेरे परमात्मा,
मुझ पर बस इतना रहम करना
ऐसे द्वीप में मुझे पैदा मत करना।

स्व+आहा

धरती की वेदी पर
चल रहा है
सृष्टि का हवन
पक्षियों द्वारा उच्चारित
मंत्रो के बीच,
आओ साथियों
हम सब भी
करते हुए
अहंकार का होम
डालें आहुति
अपने-अपने कर्मो की
दुनिया के यज्ञ में
स्व को शुद्ध
करने के लिए।

समर्पण

सौंप दो प्यार प्रभु को
सब सरल हो जाएगा
जीना सहज हो जाएगा
मरना सफल हो जायेगा।

1. जिन्दगी की राह में
आँधियां तो आयेंगी
उसकी ही रहमत से
हमको हौसला मिल पायेगा।

2. सोचता है हर कोई
अपने मन की बात हो
होगा जो मंजूर उसको
वक्त पर हो जाएगा।

3. मोड़ ले संसार वाले
नजरें तुमसे जिस घड़ी
हो यकीं तो आसरा
उसका तुम्हें मिल जाएगा।

4. माँगने से मिलता है
केवल वही जो माँगा था
कुछ न माँगो तो
खुदा खुद ही तुम्हें मिल आएगा।

सरहद

सर की हद
कहां तक है
गला काटकर
बता दिया
जिस्म के
बंटवारों ने
अब कौन
करेगा जुर्रत
जाने की
पैरों से
हद के पार।

My Report Card by a child